हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार, 16 फरवरी 2025

तापमान

अधिकतम 27.2 डिग्री
न्यूनतम 8.5 डिग्री

11 बुलेट बाइक का साइलेंसर बदलने पर अब मैकेनिकों पर भी होगी कार्रवाई

12 गर्ल्स कॉलेज में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में छात्राओं ने दिखाया दम ...

खबर संक्षेप

खेत में काम कर रहे युवक की बाइक चोरी

धारूहेड़ा। नंदरामपुर बास में खेत पर काम कर रहे युवक की बाइक चोरी हो गई। गांव निवासी सुंदर ने धारूहेड़ा थाना पुलिस को बताया कि 12 फरवरी को शाम करीब 5 बजे वह अपने खेत पर काम कर रहा था तथा बाइक खेत के पास ही खड़ी करके गया था। जब वह वापस आया तो वहां से बाइक गायब मिली। बाइक उसके पिता के नाम पर है। पुलिस ने अज्ञात पर चोरी का केस दर्ज कर लिया है।

संस्था का माता-पिता सेवा का कार्यक्रम आज

रेवाड़ी। हमारा परिवार संस्था की ओर से 16 फरवरी को पंजाबी धर्मशाला में संस्कार निर्माण का कार्यक्रम माता-पिता की सेवा करें-भगवान खुश होंगे का आयोजन किया जाएगा। संस्था के संयोजक दिनेश कपूर ने बताया कि कार्यक्रम में नई दिशा युवा मंच के अध्यक्ष एडवोकेट निशांत यादव मुख्य अतिथि व नम्रता सचदेवा प्राचार्या राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल विशिष्ट अतिथि रहेंगी। संस्था की ओर से पतंजलि के जिला प्रभारी दयाराम आर्य, हिंदू युवा वाहिनी के जिला प्रभारी श्यामसुंदर गोसेवक, वरिष्ठ भाजपा नेत्री दीपा भारद्वाज व सफाई की ब्रांड एंबेसडर कुमारी प्रियंका यादव का अभिनंदन किया जाएगा।

डंपरों का बिना वजन कराए फर्जी रसीद बनवाने पर तीन ड्राइवरों व धर्मकांटा संचालक पर केस दर्ज

कचरा उठान के करोड़ों के टेंडर में कमीशन का खेल, उजागर होने लगा घोटाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

मॉडल टाउन थाना पुलिस ने कचरे के डंपरों का बिना वजन कराए धर्मकांटे से फर्जी पर्चियां निकालने के फर्जीवाड़े में कचरा कलेक्शन फर्म की गाड़ियों के तीन ड्राइवरों व धर्मकांटा संचालक पर केस दर्ज किया है।

शहर से उठने वाले कचरे को पहले बीएमजी मॉल स्थित एमआरएफ सेंटर में डाला जाता है। उसके बाद डंपरों से बावल स्थित रामसिंहपुरा के कचरा डंपिंग यार्ड में भेजा जाता है, लेकिन इससे पहले धर्मकांटे पर डंपरों का वजन कराना अनिवार्य होता है, लेकिन डंपरों का बिना वजन कराए ही यार्ड में कचरा डाला जा रहा था और धर्मकांटे से फर्जी पर्चियां निकाली जा रही थी। नगर परिषद अधिकारियों व डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन ठेकेदार की मिलीभगत से कचरा उठान में पूरा खेल चल रहा था। गत दिवस सीएम फ्लाइंग ने कचरा उठान प्रक्रिया का निरीक्षण किया तो फर्जीवाड़ा सामने आया। केस दर्ज करने के बाद अब कचरा कलेक्शन फर्म व नप अधिकारियों से भी पूछताछ की जा रही है। जांच में और भी कई नाम सामने आने की पूरी संभावना है।

रेवाड़ी। एमआरएफ सेंटर से कचरा लेकर डंपिंग यार्ड में जाता डंपर, कचरा भरकर एमआरएफ सेंटर से निकलता डंपर। फोटो :हरिभूमि

तीन ड्राइवर व धर्मकांटा संचालक पर केस दर्ज

सीएसआई सुधीर कुमार ने मॉडल टाउन थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि नगर परिषद ने दयाचरण कंपनी को डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन सेग्रिगेशन, ट्रांसपोर्टेशन व कचरा डंपिंग व सोलिड वेस्ट का ठेका दिया हुआ है। सूचना पर जब उन्होंने जेई विकास गर्ग के साथ जांच की तो कचरा उठाने वाली गाड़ियों के बिना वजन किए धर्मकांटे पर फर्जी पर्चियां तैयार की जा रही थी। जब धर्मकांटे पर 3 फरवरी की रसीद नंबर 7874, 7875, 7883, 7884, 7894, 7895, 7899 व 7900 की जांच की गई तो रसीद में एक-दो मिनट का ही अंतर पाया गया। जब बावल रोड नई सब्जी मंडी के पास स्थित पारस धर्मकांटे पर धर्मकांटे के संचालक से पूछताछ की तो कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। धर्मकांटा संचालक सीसीटीवी फुटेज भी नहीं दे पाया और उसने डीवीआर खराब होने का बहाना बना दिया। जब पास के राम बिल्डिंग मेटेरियल की दुकान के सीसीटीवी कैमरे चैक किए तो 3 फरवरी को धर्मकांटे पर वजन के लिए कोई डंपर ही नजर आया। इससे साफ हो गया कि धर्मकांटे पर फर्जी पर्चियां तैयार कराकर कचरा डंप किया जा रहा था। धर्मकांटे से 1 फरवरी से 6 फरवरी तक काटी गई 51 पर्चियां फर्जी पाई गई। पुलिस ने फर्म की गाड़ियों के ड्राइवर सूरजमल, संदीप, राजेश व पारस धर्मकांटा के संचालक अशोक कुमार शर्मा निवासी गांव कांटी खेडी जिला महेंद्रगढ़ हाल निवास विजय नगर के खिलाफ फर्जीवाडे का केस दर्ज कर लिया है।

सीएम फ्लाइंग की रेड से पता चला

नगर परिषद में लंबे समय से कमीशन का खेल चल रहा है। सीएम फ्लाइंग की रेड से नगर परिषद में कचरा उठान घोटाला भी सामने आ गया है। कचरे के उठान में वजन को लेकर बड़ा खेल किया गया है। नगर परिषद को कचरे के वजन के हिसाब से ठेकेदार को पेमेंट करनी होती है। नगर परिषद की ओर से जारी वर्क ऑर्डर के मुताबिक 1746 रुपये प्रति टन के हिसाब से कचरा रामसिंह पुरा बावल साइट पर पहुंचाना था, लेकिन कचरे के डंपरों का बिना वजन किए धर्मकांटे पर फर्जी तरीके से पर्ची काट दी गई। फर्जीवाडे के इस खेल में धर्मकांटा संचालक व डंपर ड्राइवरों के खिलाफ शिकायत दी गई है, लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या अधिकारियों व ठेकेदार का इसकी जानकारी नहीं थी। अगर अब ठीक तरह से जांच हो तो इस खेल में कई नाम उजागर हो सकते है। शहर में डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन के लिए पांच करोड़ से अधिक का टेंडर दिया गया था, जिसमें तीन करोड़ से अधिक की पेमेंट भी की जा चुकी है, जबकि ठेका लेने के बाद से ठेकेदार की ओर से पूरी गाड़ियां तक नहीं लगाई गई और न ही बाकी नियम पूरे किए गए है।

घर में घुसकर महिला से मारपीट करने पर चार लोगों पर केस दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

लुखी गांव की एक महिला ने गांव की ही एक महिला सहित चार लोगों पर घर में घुसकर मारपीट व अभद्र व्यवहार करने तथा उनके मकान पर जबरन कब्जा करने का आरोप लगाते हुए नाहड़ पुलिस को शिकायत दी है। गीता देवी ने पुलिस को बताया कि सेना में सूबेदार रहे उनके पति अशोक कुमार का देहांत हो चुका है। वह फिलहाल एक बेटा और एक बेटी के साथ कर्नाटक में रह रही है। पति के देहांत से पहले उन्होंने तेरह साल पहले अपना मकान बनाया था। मकान में उनके नाम से बिजली का मीटर लगा हुआ है। 12 फरवरी को वह अपने घर लूखी गांव आई हुई थी कि सुरेश, मनोज व मंजीत घर में घुस आए तथा उन्हें गालियां देने लगे। तीनों ने मिलकर उन्हें पीटा तथा उन्हें जबरन घर से बाहर निकाल दिया। मनोज ने मकान पर कब्जा करने की नीयत से अपना ट्रैक्टर जबरदस्ती मकान की गैलरी में खड़ा कर दिया तथा मनोज की पत्नी गुणवती उर्फ मनीषा ने जबरदस्ती मकान पर कब्जा कर लिया। शुक्रवार को उन्होंने नाहड़ पुलिस चौकी में शिकायत दी। पुलिस ने मौके पर जांच के बाद सभी आरोपियों के विरुद्ध विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है।

दुबई के दोस्त के नाम पर व्यक्ति के साथ 1.25 लाख रुपये की ठगी

रेवाड़ी। शहर के बल्लूवाड़ा निवासी एक व्यक्ति के साथ साइबर ठगों ने दुबई में रह रहे दोस्त के नाम से मैसेज करके 1.25 लाख रुपये ठग लिए। बल्लूवाड़ा निवासी भवानी शंकर ने साइबर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनका एक दोस्त अमित पहले दुबई रहता था। उनके पास फेसबुक मेसेंजर पर मैसेज आया उसके वीजा में दिक्कत आ गई है। इसके बाद साइबर ठग ने भवानी शंकर को एक एजेंट का व्हाट्सएप नंबर व अकाउंट की डिटेल भेज दी। इसके बाद उसके पास एक कॉल आया,बजिसने अपने आपको बैंक कर्मचारी बताया। बैंक कर्मचारी ने कहा कि आपके खाते में पैसे कल वापस पहुंच जाएंगे, जिसके बाद भवानी शंकर ने उसको अपने खाते से 125000 रुपये ट्रांसफर कर दिए। पुलिस ने अज्ञात पर साइबर ठगी का केस दर्ज कर लिया है।

KOTPUTLI, BEHROR TOPPER

Somay Saini
99.95%ile

15 वर्षों से लगातार जिले में नं. 1

Raath International
(Group of Schools)

22 YEARS OF EXCELLENCE IN EDUCATION

ALWAR, KHAIRTHAL TIJARA TOPPER*

Aditya Loha
99.91%ile

JEE Main Result-2025

A	99%ile - 6
B	98%ile - 10
O	97%ile - 16
V	95%ile - 24
E	90%ile - 41

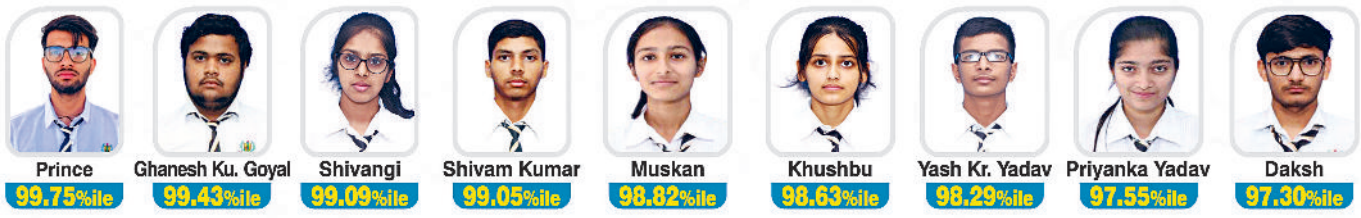

Prince 99.75%ile | Ghanesh Ku. Goyal 99.43%ile | Shivangi 99.09%ile | Shivam Kumar 99.05%ile | Muskan 98.82%ile | Khushbu 98.63%ile | Yash Kr. Yadav 98.29%ile | Priyanka Yadav 97.55%ile | Daksh 97.30%ile

Our Alumni in JEE Main

Paarth 97.30%ile | Amarjeet 97.12%ile | Shantanu 97.12%ile | Anuj Kumar 97.02%ile | Vineet 96.98%ile | Mayank Kumar 96.91%ile | Jashan Mahlawat 96.79%ile | Tarun Yadav 96.74%ile | Harsh Sharma 96.74%ile

445

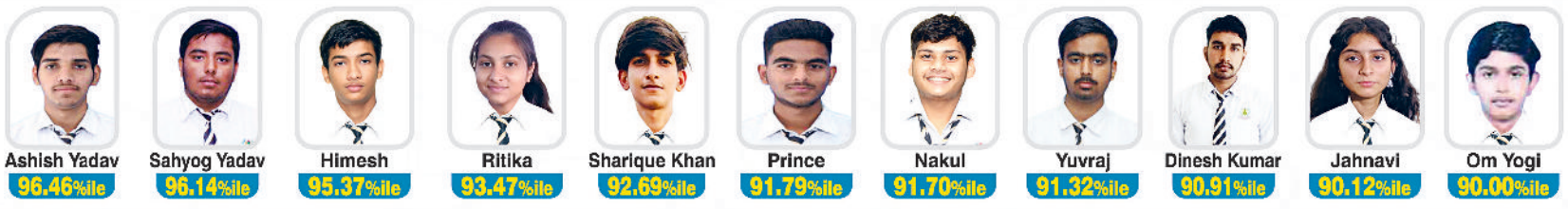

Ashish Yadav 96.46%ile | Sahyog Yadav 96.14%ile | Himesh 95.37%ile | Ritika 93.47%ile | Sharique Khan 92.69%ile | Prince 91.79%ile | Nakul 91.70%ile | Yuvraj 91.32%ile | Dinesh Kumar 90.91%ile | Jahnavi 90.12%ile | Om Yogi 90.00%ile

Our Alumni in JEE Adv.

85

OUR SUPERB ACHIEVEMENTS
NEET 175+ Students | JEE Main 445+ Students | JEE Advance 85+ Students | NDA 250+ Students | NTSE 275+ Students | STSE 362+ Students | CA 110+ Students | CLAT 85+ Students

Join our Upto 100% Scholarship Exam
For Grades I to XII
Exam Time - 11:00 am

SUBJECT

For Grades (1st to 3rd) :	For Grades (4th to 12th) :
Hindi (15), English (15), Maths (15), EVS (15)	English (20), Maths (20), Science (20)

SCHOLARSHIP
ABOVE 90% : AS PER PERCENTAGE OBTAINED
ABOVE 85% : 50% SCHOLARSHIP
ABOVE 80% : 25% SCHOLARSHIP
SCHOLARSHIP IS APPLICABLE IN TUITION FEE ONLY

16th FEB., (Sunday)
For Behror, Alwar & Kund Campuses
23rd FEB., (Sunday)
For Bhiwadi Campus
Buses facility available on all routes

Scan QR Code For Registration

No Reg. Fee

raathinternationalschoolsgroup.com
ALWAR 9887637800 | BEHROR 8769128418 | KUND 7027740606

BHIWADI CAMPUS
Fully Air-conditioned
9257675606

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव दौरान मुनाफे का सौदा

▶▶ परिसंपत्ति का 65 से 80% आवंटन शेयरों में किया जाता है निवेश
▶▶ शेष बॉन्ड में लगाया जाता है, इसमें नुकसान होने बेहद कम चांस
▶▶ शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव निवेशकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती
▶▶ संतुलित परिसंपत्ति आवंटन से चुनौतियों से निपटने में समर्थ

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव निवेशकों के लिए हमेशा से ही एक चुनौती बनी हुई है। इसके साथ ही लंबे इंतजार के बाद ब्याज दर में कटौती की संभावना बढ़ गई है। ऐसे में निवेश के मोर्चे पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए अग्रेसिव हाइब्रिड म्युचुअल फंड के जरिये निवेश समझदारी भरा कदम हो सकता है। बाजार के जानकारों का कहना है कि 'वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, मुद्रास्फीति के दबाव और ब्याज दर में संभावित कटौती जैसी आशंकाओं के कारण शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव वाले मौजूदा माहौल में निवेश के लिए अग्रेसिव हाइब्रिड फंड बिल्कुल उपयुक्त हैं। ये संतुलित परिसंपत्ति आवंटन के कारण ऐसे फंड इन चुनौतियों से निपटने में अधिक समर्थ होते हैं।' 'हाइब्रिड फंड सभी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त होते हैं। ये फंड इक्विटी बाजार में नए निवेशकों के लिए सबसे अच्छे होते हैं, क्योंकि इनसे परिसंपत्ति वर्ग में भरोसा बढ़ाने में मदद मिलती है।'

उतार-चढ़ाव से बचाव

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड के तहत परिसंपत्ति का 65 से 80 फीसदी आवंटन शेयरों में और शेष बॉन्ड में किया जाता है। आम तौर पर ये फंड अपने इक्विटी पोर्टफोलियो के लिए लार्जकैप शेयरों में अधिक निवेश करने की रणनीति अपनाते हैं। इससे मिडकैप एवं स्मॉलकैप शेयरों में अधिक निवेश वाले पोर्टफोलियो के मुकाबले उतार-चढ़ाव के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। ब्याज दरों में गिरावट आने पर पोर्टफोलियो के बॉन्ड वाले हिस्से से पूंजीगत लाभ मिलता है। मगर ब्याज दरों में वृद्धि होने पर अल्प अवधि में नुकसान भी हो सकता है।

70 फीसदी आवंटन लार्जकैप में

बाजार के जानकारों के अनुसार 'फिलहाल इस श्रेणी में 70 फीसदी से अधिक का आवंटन लार्जकैप शेयरों में किया जाता है। इससे पोर्टफोलियो को स्थिरता मिलती है और उस पर मिडकैप एवं स्मॉलकैप में अधिक आवंटन वाले पोर्टफोलियो के मुकाबले बाजार के उतार-चढ़ाव का कम असर होता है। स्मॉलकैप शेयरों में 5 से 7 फीसदी और बाकी

मिडकैप शेयरों में निवेश किया जाता है। इससे फंड के इक्विटी पोर्टफोलियो में मिडकैप एवं स्मॉलकैप से संबंधित जोखिम कम होता है। मिडकैप और स्मॉलकैप शेयर फिलहाल अधिक मूल्यांकन पर कारोबार कर रहे हैं। इसके अलावा डेट वाला हिस्सा पोर्टफोलियो को अधिक स्थिरता प्रदान करता है।'

लार्जकैप बेहतर

आर्थिक मंदी और कंपनियों के सुस्त मुनाफे जैसी स्थितियों का सामना करने के लिए लार्जकैप शेयर आम तौर पर मिडकैप एवं स्मॉलकैप शेयरों के मुकाबले बेहतर स्थिति में होते हैं। 'वित्त वर्ष 2024 जैसी बाजार परिस्थितियों में हाइब्रिड फंड शुद्ध इक्विटी फंड के मुकाबले कमजोर प्रदर्शन करते हैं। मगर वे लंबी अवधि में जोखिम के बाद भी बेहतर रिटर्न देते हैं क्योंकि बाजार का रुख आम तौर पर चक्रीय होता है। शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के शानदार रिटर्न के बाद 2025 उतार-चढ़ाव वाला वर्ष हो सकता है। ऐसे में हाइब्रिड फंड का प्रदर्शन आम तौर पर बेहतर होता है। इसके अलावा हम उम्मीद करते हैं कि भारतीय रिजर्व बैंक इस साल दरों में कटौती करेगा। इससे डेट फंड को अधिक रिटर्न देने में मदद मिलेगी क्योंकि बॉन्ड की कीमतों में तेजी आ सकती है।'

किसे करना चाहिए निवेश?

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड उन निवेशकों को आकर्षित करते हैं जो अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव के साथ शेयर बाजार में निवेश करना चाहते हैं। 'यह फंड कम जोखिम लेने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त है क्योंकि डेट आवंटन के कारण इसमें उतार-चढ़ाव का जोखिम कम होता है। इसके अलावा यह फंड उन नए निवेशकों के लिए भी उपयुक्त हैं जो शेयर बाजार में अपेक्षाकृत सुरक्षित तरीके से प्रवेश करना चाहते हैं और जिनके वित्तीय लक्ष्य मध्यावधि के लिए हैं।'

इन बातों का रखें ध्यान

निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो का आकलन करना चाहिए और जोखिम लेने की अपनी क्षमता के अनुरूप फंडों का चयन करना चाहिए। उन्हें निवेश से पहले फंड के पिछले प्रदर्शन पर भी गौर करना करना चाहिए। वैसे तो इन फंडों की रफ्तार अपेक्षाकृत स्थिर होती है, लेकिन कभी-कभी उतार-चढ़ाव का दौर भी दिख सकता है। इसलिए निवेशकों को कम से कम 5 साल के लिए निवेश पर विचार करना चाहिए। इन फंडों में निवेश करने का सबसे प्रभावी तरीका सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) है। 'अग्रेसिव हाइब्रिड फंडों में कम से कम 3 से 5 साल तक निवेश रखना चाहिए। इससे निवेशक को बाजार चक्रों के प्रभावों से निपटने और संतुलित रिटर्न हासिल करने में मदद मिलती है।' उनका सुझाव है कि मध्यम जोखिम लेने वाले निवेशक अपने पोर्टफोलियो का 15 से 25 फीसदी आवंटन इस फंड में कर सकते हैं जबकि कम जोखिम लेने वाले निवेशकों को 10 से 15 फीसदी आवंटन करना चाहिए।

मल्टी एसेट फंड बाजार की उथल-पुथल के बीच स्टेबल रिटर्न का दम

■ 1 से 5 साल में मल्टी एसेट फंड की टॉप स्कीम्स ने दिया अच्छा पैसा
■ कम पैसों में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने के लिए जाना जाता है
■ इक्विटी फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करें

जानकारी
बिजनेस डेस्क

बाजार में भारी उथल-पुथल हो तो तमाम निवेशकों के सामने स्टेबल रिटर्न हासिल करने की चुनौती खड़ी हो जाती है। म्यूचुअल फंड्स में पैसे लगाने वाले रिटेल इनवेस्टर्स के सामने भी यही सवाल होता है कि इक्विटी फंड्स के गिरते रिटर्न के बीच उन्हें कहां निवेश करना चाहिए? हालांकि इक्विटी फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करना चाहिए और शॉर्ट टर्म में होने वाली उथल-पुथल से घबराना नहीं चाहिए, लेकिन सच तो यह भी है कि इक्विटी मार्केट के उतार-चढ़ावों को बैलेंस करने के लिए आपके पोर्टफोलियो में डेट से लेकर गोल्ड और सिल्वर तक, दूसरे एसेट क्लास वाले निवेश भी शामिल होने चाहिए। मगर जिन निवेशकों का पोर्टफोलियो इतना बड़ा नहीं होता कि वे इतने सारे अलग-अलग एसेट क्लास में निवेश कर सकें, उनके सामने क्या विकल्प? इस सवाल का जवाब हो सकते हैं मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स के जरिये कम पैसों में ही पोर्टफोलियो को तमाम एसेट क्लास में डायवर्सिफाई किया जा सकता है।

एक साल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड

1. व्हाइटओक कैपिटल मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	19.66%
2. डीएसपी मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	17.23%
3. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	16.11%
4. निप्पॉन इंडिया मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.98 %
5. आदित्य बिड़ला सन लाइफ मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.81%
6. यूटीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.45%
7. बंधन मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.39%
8. एक्सिस मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.10%

लॉन्ग टर्म रिटर्न : मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स का लॉन्ग टर्म रिटर्न देखने से पता चलता है कि लंबी अवधि के निवेश के लिए भी यह काफी बेहतर विकल्प हो सकते हैं। टॉप 5 मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स के पिछले 5 साल के रिटर्न के आंकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं।

5 साल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड

1. क्वांट मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	27.78 %
2. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	21.68%
3. यूटीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.84%
4. एचडीएफसी मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.70%
5. एसबीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	14.39%

मल्टी एसेट फंड्स की इनवेस्टमेंट स्ट्रैटजी : मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स की निवेश रणनीति में निवेशकों को हमेशा स्टेबल और बैलेंस्ड रिटर्न देने पर जोर दिया जाता है। अपने इस मकसद को हासिल करने के लिए ये फंड इक्विटी और डेट के अलावा गोल्ड, सिल्वर, रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स में भी पैसे लगाते हैं। इक्विटी, डेट और गोल्ड में इनका निवेश कम से कम 10-10% होता है। ऐसी निवेश रणनीति और अल-अलग एसेट क्लास में बंटे पोर्टफोलियो की वजह से ये फंड बाजार में तेज उतार-चढ़ाव के दौरान भी बेहतर रिटर्न देने में सफल होते हैं। साथ ही ये फंड कम रिस्क में बेहतर रिटर्न के लिए बाजार के हालात और ट्रेंड्स को ध्यान में रखते हुए अपने एसेट एलोकेशन में बदलाव भी करते रहते हैं।

अस्थिरता के दौर में निवेश का बेहतर विकल्प

मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स को उनके डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो की वजह से उतार-चढ़ाव भरे माहौल में निवेश का बेहतर तरीका माना जाता है। हाइब्रिड म्यूचुअल फंड्स की कैटेगरी में आने वाले इन फंड्स के पोर्टफोलियो में इक्विटी से लेकर डेट और गोल्ड-सिल्वर समेत तमाम अलग-अलग एसेट्स क्लास शामिल होते हैं। यही वजह है कि इनका रिस्क-रिटर्न बैलेंस काफी अच्छा रहता है।

टॉप मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स का 1 साल का रिटर्न

इन दिनों बाजार में देखी जा रही भारी उथल-पुथल के बावजूद कम से कम 8 मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ऐसे हैं, जिन्होंने 1 साल में 15% से ज्यादा रिटर्न दिया है। इनमें सबसे ज्यादा मुनाफा देने वाले फंड का एक साल का रिटर्न लगभग 20% रहा है। एक हाइब्रिड फंड्स के लिए इतना रिटर्न काफी अच्छा माना जा सकता है। खास तौर पर बाजार में गिरावट के माहौल को देखते हुए यह वाकई बढ़िया प्रदर्शन है।

किनके लिए सही हैं मल्टी एसेट एलोकेशन फंड

ऐसे इनवेस्टर मल्टी एसेट एलोकेशन फंड में निवेश करने की सोच सकते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के दौरान स्टेबल रिटर्न चाहते हैं और इसके लिए अपने पोर्टफोलियो में हर एसेट क्लास को जगह देना चाहते हैं। खास तौर पर ऐसे छोटे निवेशक, जो डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो तैयार करने के लिए ज्यादा बड़ी रकम नहीं लगा सकते, मल्टी एसेट फंड पर विचार कर सकते हैं। हालांकि स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता के बावजूद इक्विटी में एक्सपोजर और दूसरे एसेट्स के बाजार की परिस्थितियों से प्रभावित होने के कारण ज्यादातर मल्टी एसेट फंड्स का रिस्क लेवल 'हाई' या 'वेरी हाई' रखा गया है। यानी रिस्क तो इनमें निवेश के साथ भी जुड़ा हुआ है। इसलिए निवेश का फैसला करने से पहले सभी बातों को अच्छी तरह समझ लें।

(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सिफारिश करना नहीं है। म्यूचुअल फंड के पिछले रिटर्न को भविष्य में वैसे ही प्रदर्शन की गारंटी नहीं माना जा सकता। निवेश का कोई भी फैसला सेबी से मान्यता प्राप्त निवेश सलाहकार की राय लेने के बाद ही करें।)

पैसिव म्यूचुअल फंड बढ़ रहा बोलबाला एयूएम 24% बढ़कर 11 लाख करोड़ पर

●लगातार निवेशकों की बनते जा रहे हैं पसंद, दे रहे बढ़िया रिटर्न ● इस साल पैसिव फंडों ने मचाया धमाल, दिया कई गुणा मुनाफा ● पैसिव म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी

योजना
बिजनेस डेस्क

तेजी से बढ़ रही म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में इस समय पैसिव फंड का बोलबाला है। साल 2024 में इंडेक्स फंड और एक्सचेंज ट्रेडेड फंड सहित पैसिव फंड के निवेशकों के पोर्टफोलियो यानी खाता संख्या में 37 प्रतिशत की तेजी आई है, जबकि कुल एसेट अंडर मैनेजमेंट 24% से ज्यादा बढ़कर 11 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है। आखिर पैसिव फंड क्या होते हैं, जिनका बोलबाला इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है और निवेशकों को यह फंड क्यों इतने पसंद आ रहे हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, म्यूचुअल फंड हाउसों ने 2024 में कुल 122 नई पैसिव फंड योजनाएं लॉन्च कीं। फंड इंडस्ट्री में सबसे प्रमुख कंपनियों में शामिल निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड के पास अब पैसिव फंडों में 1.46 करोड़ पोर्टफोलियो हैं। इसका कुल एयूएम 1.65 लाख करोड़ रुपये है और ईटीएफ के ट्रेडिंग वॉल्यूम का 55% बड़ा हिस्सा है। कोटक म्यूचुअल फंड, एक्सिस और मोतीलाल ओसवाल म्यूचुअल फंड जैसे अन्य फंड हाउसों ने भी पैसिव फंड में बेहतर वृद्धि दर्ज की है।

निवेशकों को समझना आसान

निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड ने साल 2024 में पैसिव कैटेगरी में 8 नए फंड लॉन्च किए। अब उसके पास उद्योग में 24 ईटीएफ और 21 इंडेक्स फंड हैं। इस श्रेणी को चुनने में निवेशकों की बढ़ती रुचि को देखते हुए अन्य एएमसी ने भी कई पैसिव फंड लॉन्च किए हैं। पैसिव फंडों ने भी निवेशकों को आकर्षित किया है, क्योंकि उनकी लागत संरचना कम होती है और उन्हें समझना आसान होता है, जिससे वे रिटेल और फंड मैनेजर दोनों निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बन जाते हैं।

अद्वितीय निवेश दृष्टिकोण

जो लोग सोच रहे हैं कि पैसिव म्यूचुअल फंड क्या हैं, तो इसका जवाब अद्वितीय निवेश दृष्टिकोण में निहित है। अपने सक्रिय समकक्षों के विपरीत, पैसिवली मैनेज्ड फंड बाजार से बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास नहीं करते हैं। इसके बजाय, उनका प्राथमिक लक्ष्य ऐसे रिटर्न प्राप्त करना है जो बेंचमार्क इंडेक्स को बारीकी से दर्शाते हैं। नतीजतन, फंड मैनेजर की भूमिका अपेक्षाकृत निष्क्रिय होती है, जो एक पोर्टफोलियो संरचना को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करती है जो इंडेक्स की अंतर्निहित परिसंपत्तियों को दर्शाती है।

क्यों खास हैं पैसिव फंड

निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड के ईटीएफ प्रमुख अरुण सुंदरेसन कहते हैं कि पैसिव एक दिलचस्प ऑफरिंग बनाता है। फंड बाजार के विभिन्न हिस्सों में शुद्ध एक्सपोजर प्रदान करते हैं, जिससे वे सच्चे, सही लेबल उत्पाद बन जाते हैं। बहुत सारे अनूठे फंड हैं, जो निवेशकों को चुनने के लिए बहुत अलग पोर्टफोलियो और विभिन्न प्रकार के जोखिम-रिटर्न प्रोफाइल प्रदान करते हैं। इनके इसी डाईवर्सिफिकेशन की वजह से निवेशकों को यहां पैसे लगाना कम जोखिम वाला लगता है।

क्या होते हैं पैसिव फंड

पैसिव म्यूचुअल फंड में किसी सूचकांक या खंड को ट्रैक किया जाता है और इसमें अलग-अलग स्टॉक को चुनने की जरूरत नहीं होती है। इनका खर्चा भी एक्टिव फंड की तुलना में कम आता है। ये फंड बाजार के सूचकांक को दोहराने की कोशिश करते हैं, जबकि बेंचमार्क इंडेक्स को ट्रैक करके अपने जोखिम का आकलन करते हैं। जैसा शेयर बाजार प्रदर्शन करता है, उसी के मुताबिक निवेशकों को रिटर्न देते हैं। इन पर जोखिम भी कम होता है और लंबी अवधि में निवेश करने पर ज्यादा सुरक्षित माना जाता है।

कम प्रबंधन शुल्क लेते हैं

पैसिव फंड्स की मुख्य अपील उनकी कम लागत में निहित है, क्योंकि वे आम तौर पर एक्टिव फंड्स की तुलना में कम प्रबंधन शुल्क लेते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें व्यापक शोध, स्टॉक चयन और लगातार ट्रेडिंग की आवश्यकता नहीं होती है, जो सभी खर्चों को बढ़ा सकते हैं। भारत में पैसिव म्यूचुअल फंड्स के उदय के साथ, निवेशकों के पास अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और संभावित रूप से बाजार-मिलान रिटर्न प्राप्त करने के लिए ढेर सारे विकल्प हैं।

पैसिव फंड निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और बाजार के व्यापक क्षेत्रों में एक्सपोजर प्राप्त करने का एक लागत प्रभावी तरीका प्रदान करते हैं। भारत में पैसिव म्यूचुअल फंड्स के उदय के साथ, निवेशकों के पास अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और संभावित रूप से बाजार-मिलान रिटर्न प्राप्त करने के लिए ढेर सारे विकल्प हैं।

तैयारी — पिछले साल 16 गोल्ड ईटीएफ में 657.46 करोड़ का निवेश हुआ था, दिसंबर 2024 के मुकाबले देखें तो इसमें 486% का उछाल आया

दिसंबर 2024 में गोल्ड ईटीएफ में 640.16 करोड़ रुपये का निवेश हुआ

गोल्ड ईटीएफ में जमकर निवेश कर रहे लोग, करीब 6 गुना बढ़ा जनवरी में 3,751.42 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड हाई पर नेट इनफ्लो

इक्विटी में लगातार गिरावट और ग्लोबल अनिश्चितता के बीच भारत में नए साल की शुरुआत यानी जनवरी के दौरान गोल्ड ईटीएफ में रिकॉर्ड निवेश हुआ। यह लगातार 9वां महीना है जब घरेलू स्तर पर गोल्ड ईटीएफ में नेट इनफ्लो दर्ज किया गया है। इससे पहले बीते साल अप्रैल में गोल्ड ईटीएफ में नेट आउटफ्लो देखा गया था। एसोसिएशन ऑफ म्युचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के अनुसार देश के कुल 18 गोल्ड ईटीएफ में जनवरी 2025 के दौरान रिकॉर्ड 3,751.42 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ। इससे पहले सबसे ज्यादा मंथली नेट इनफ्लो (+1,961.57 करोड़ रुपये) बीते साल अक्टूबर में आया था। पिछले साल की समान अवधि यानी जनवरी 2024 के मुकाबले यह 471 फीसदी ज्यादा है। पिछले साल की समान अवधि के दौरान देश के कुल 16 गोल्ड ईटीएफ में 657.46 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ था। पिछले महीने यानी दिसंबर 2024 के मुकाबले देखें तो इसमें 486 फीसदी का उछाल आया है। दिसंबर 2024 के दौरान गोल्ड ईटीएफ में 640.16 करोड़ रुपये रुपये का शुद्ध निवेश हुआ था।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

गोल्ड की कीमतों में शानदार तेजी

गोल्ड की कीमतों में शानदार तेजी और लगातार इनफ्लो के चलते जनवरी के अंत में गोल्ड ईटीएफ का नेट एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) बढ़कर रिकॉर्ड 51,839.39 करोड रुपये पर पहुंच गया। पिछले साल की समान अवधि के दौरान यह 27,778.08 करोड़ रुपये था जबकि दिसंबर 2024 में यह 44,595.60 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। जनवरी के दौरान घरेलू स्तर पर गोल्ड की बेंचमार्क कीमतों में 8 फीसदी का इजाफा हुआ। इसी अवधि के दौरान घरेलू इक्विटी बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी क्रमश 0.6 और 0.8 फीसदी टूटे। मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में तो क्रमशः 6 फीसदी और 10 फीसदी की जोरदार गिरावट रही।

क्या कहते हैं आंकड़े

इससे पहले पूरे कैलेंडर ईयर 2024 के दौरान गोल्ड ईटीएफ में कुल 11,266.11 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ जबकि कैलेंडर ईयर 2023 के दौरान 2,923.81 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश दर्ज किया गया था। कैलेंडर ईयर 2022 के दौरान 11 गोल्ड ईटीएफ में कुल 458.79 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

2024 में मंथली निवेश/निकासी

- दिसंबर 2024 +640.16 करोड़ रुपये
- नवंबर 2024 +1,256.72 करोड़ रुपये
- अक्टूबर 2024 +1,961.57 करोड़ रुपये
- सितंबर 2024 +1,232.99 करोड़ रुपये
- अगस्त 2024 +1,611.38 करोड़ रुपये
- जुलाई 2024 +1,337.35 करोड़ रुपये
- जून +726.16 करोड़ रुपये
- मई +827.43 करोड़ रुपये
- अप्रैल -395.69 करोड़ रुपये
- मार्च +373.36 करोड़ रुपये
- फरवरी +657.46 करोड़ रुपये
- जनवरी +997.22 करोड़ रुपये

क्यों जमकर लग रहा पैसा

जानकारों के अनुसार इक्विटी में लगातार गिरावट और ग्लोबल अनिश्चितता ने निवेशकों को गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। गोल्ड में बेहतर रिटर्न की संभावना के बीच निवेशक फिलहाल अपने पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करने के लिए इस एसेट क्लास में ईटीएफ के जरिये जमकर निवेश कर रहे हैं। साथ ही सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की कोई और सीरीज के आगे लॉन्च नहीं होने के आसार और पिछले बजट में टैक्स नियमों में हुए बदलाव के बाद गोल्ड ईटीएफ का आकर्षण बढ़ा है।

ग्लोबल लेवल पर शानदार शुरुआत

ग्लोबल लेवल पर गोल्ड ईटीएफ के लिए नए साल की शुरुआत शानदार रही। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल से मिले ताजा आंकड़ों के मुताबिक 2025 की शुरुआत यानी जनवरी के दौरान ग्लोबल लेवल पर गोल्ड ईटीएफ में निवेश 3 बिलियन डॉलर बढ़ा। वॉल्यूम /होल्डिंग के लिहाज से इस दौरान निवेश में 34.5 टन की वृद्धि हुई। सोने की कीमतों में तेजी और लगातार दूसरे महीने आए इनफ्लो के दम पर जनवरी 2025 के अंत तक गोल्ड ईटीएफ का एसेट अंडर मैनेजमेंट यानी एयूएम और टोटल होल्डिंग बढ़कर क्रमशः रिकॉर्ड 294.2 बिलियन डॉलर और 3,253.3 टन पर पहुंच गए। ग्लोबल लेवल पर ट्रेड वॉर की आशंका और अमेरिकी डॉलर में कमजोरी के बीच जनवरी में सोने के भाव में तकरीबन 8 फीसदी का इजाफा हुआ।

28.6 टन का आउटफ्लो

पिछले महीने यानी दिसंबर 2024 के दौरान भी गोल्ड ईटीएफ में निवेश 0.3 बिलियन डॉलर यानी 3.6 टन बढ़ा था। हालांकि बीते साल नवंबर में लगातार छह महीने की तेजी के बाद गोल्ड ईटीएफ में 2.1 बिलियन डॉलर यानी 28.6 टन का आउटफ्लो दर्ज किया गया था।जनवरी के दौरान गोल्ड ईटीएफ को सबसे तगड़ा सपोर्ट यूरोप से मिला। पिछले महीने यूरोप में गोल्ड ईटीएफ में निवेश बढ़कर मार्च 2022 के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान यूरोप में 3.4 बिलियन डॉलर (+39 टन) का नेट इनफ्लो देखा गया। ज्यादातर निवेश इंग्लैंड और जर्मनी में आया। हालांकि बीते साल ज्यादातर महीने यूरोप में नेट आउटफ्लो दर्ज किया गया था। नार्थ अमेरिकी फंडों में लगातार दूसरे महीने जनवरी में आउटफ्लो देखा गया। इस दौरान नार्थ अमेरिकी फंडों से निवेशकों ने नेट 499 मिलियन डॉलर (-5.9 टन) निकाले। जबकि एशियाई फंडों में निवेशकों ने जनवरी में नेट 57 मिलियन डॉलर (+0.3 टन) डाले। एशिया में भारत इनफ्लो के मामले में सबसे आगे रहा। हालांकि चीन में इस दौरान 399.1 मिलियन डॉलर का आउटफ्लो दर्ज किया गया।

खबर संक्षेप

नैचाना में दुकान पर गया व्यक्ति लापता

कसोला। गांव नैचाना में दुकान पर गया व्यक्ति लापता हो गया। मूलरूप से नैचाना निवासी कविता ने कसोला थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह सेक्टर-2 में किराये पर रहते है। उसका पति अमित कुमार 8 फरवरी को सेक्टर-2 ने नैचाना दुकान पर गया था, जिसके बाद से अभी तक वापस नहीं आया है। अपने स्तर पर काफी तलाश करने पर भी उसका कोई पता नहीं चल सका। महिला की शिकायत पर पुलिस ने गुमशुदगी का केस दर्ज कर लिया है।

सेक्टर-18 के निर्माणाधीन मकान से मोटर चोरी

रेवाड़ी। सेक्टर-18 स्थित निर्माणाधीन मकान से चोर पानी की मोटर चोरी कर ले गए। गांव लूला अहीर निवासी सुनिता ने मॉडल टाउन थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि सेक्टर-18 में उनके मकान का निर्माण कार्य चल रहा है। 14 फरवरी को जब वह मकान पर पहुंची तो वहां से पानी की मोटर चोरी मिली। आसपास पूछताछ करने व काफी तलाश करने पर भी मोटर का पता नहीं चल पाया। पुलिस ने अज्ञात पर चोरी का केस दर्ज कर लिया है।

दिल्ली रोड शोरूम के बाहर खड़ी बाइक चोरी

रेवाड़ी। दिल्ली रोड स्थित बाइक शोरूम के बाहर खड़ी बाइक चोरी हो गई। गांव बूढ़पुर निवासी केशव कुमार ने मॉडल टाउन थाना पुलिस को बताया कि 14 फरवरी को शाम करीब 5:13 बजे वह दिल्ली रोड़ स्थित रॉयल इनफील्ड शोरूम पर गया था तथा अपनी बाइक बाहर खड़ी करके अंदर चला गया था। जब कुछ देर बाद वह वापस आया तो वहां से बाइक चोरी हो चुकी थी। पुलिस ने अज्ञात पर चोरी का केस दर्ज कर लिया है।

मेघवाल जागृति मंच की बैठक आज

रेवाड़ी। मेघवाल समाज की आगामी बैठक 16 फरवरी को गांव जाट-जाटी में आयोजित की जाएगी। मेघवाल जागृति मंच के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने बताया कि मेघवाल समाज 24वीं बैठक रविवार को सुबह 11 बजे होगी। मीटिंग में राजस्थान की तर्ज पर हरियाणा में भी अनुसूचित जाति के लोगों को मेघवाल के नाम से प्रमाण-पत्र बनावाने को लेकर चर्चा की जाएगी।

डीएसपी ट्रैफिक ने ऑटो मार्केट के पदाधिकारियों और मैकेनिकों की बैठक में दिए निर्देश

बुलेट बाइक में मॉडिफाई साइलेंसर न लगाने के सख्त निर्देश दिए

बुलेट मोटरसाइकिल का साइलेंसर बदलने पर अब मैकेनिकों पर भी होगी कार्रवाई

डीएसपी ट्रैफिक ने थाना शहर में ऑटो मार्केट के पदाधिकारियों और मैकेनिकों की बैठक ली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। बाइक मैकिनिकों की बैठक लेते डीएसपी। फोटो :हरिभूमि

डीएसपी ट्रैफिक विनोद शंकर ने शनिवार को ऑटो मार्केट के पदाधिकारियों और मैकेनिकों की बैठक लेकर बुलेट बाइक में मॉडिफाई साइलेंसर न लगाने के सख्त निर्देश दिए है। बुलेट बाइक में मॉडिफाई साइलेंसर लगाकर पटाखे छोड़ने और दशहत फैलाने वाले बाइक सवारों पर पुलिस सख्त कार्रवाई कर रही है। शनिवार को डीएसपी ट्रैफिक ने थाना शहर में ऑटो मार्केट के पदाधिकारियों और मैकेनिकों की बैठक ली। डीएसपी ट्रैफिक ने कहा कि बुलेट मोटरसाइकिल में साइलेंसर बदलवा कर सड़कों पर पटाखे फोड़ना मोटरयान अधिनियम का उल्लंघन है। ऐसा करने वाले बाइक चालकों पर ट्रैफिक पुलिस द्वारा सख्ती से कार्रवाई की जा रही है। चालान करने के साथ ही मोटरसाइकिल को जब्त भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बुलेट मोटरसाइकिल का साइलेंसर बदलने पर अब मिस्त्री पर भी कार्रवाई की जाएगी। डीएसपी ने बताया कि एसपी डा. मयंक गुप्ता के निर्देश पर शहर में पटाखों की आवाज निकालने वाले बाइक सवारों पर पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। मोटर वाहन अधिनियम के तहत जब्त किया जा रहा है। ये बुलेट सवार बाइक चलाते हैं तो मॉडिफाई साइलेंसर से पटाखे फोड़ते हैं, जिससे आसपास चलने वाले वाहन चालकों में दहशत फैलती है। सभी से वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पालन करने का आह्वान किया।

ट्रैफिक नियमों को अपनी रोजाना की जिंदगी में अपनाना बहुत जरूरी: डीएसपी

- ट्रैफिक पुलिस ने गांव पदैयावास में आमजन को नशे के दुष्प्रभावों, साइबर अपराध व यातायात नियमों को लेकर किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। ग्रामीणों को जानकारी देते हुए पुलिस अधिकारी। फोटो :हरिभूमि

ट्रैफिक पुलिस ने की ओर से शनिवार को गांव पदैयावास में आमजन को नशे के दुष्प्रभावों, साइबर अपराध व यातायात नियमों को लेकर जागरूक किया गया। डीएसपी ट्रैफिक विनोद शंकर ने शनिवार को गांव पदैयावास में आमजन को नशे के दुष्प्रभावों, साइबर अपराध व यातायात नियमों बारे जागरूक किया। कार्यक्रम में धारूहेड़ा टीएपी इंचार्ज एएसआई दलीप सिंह सहित साइबर थाने एचसी हरिओम व एचसी चरण सिंह भी मौजूद थे। इस मौके पर डीएसपी ट्रैफिक विनोद शंकर ने कहा की ट्रैफिक नियमों को अपनी रोजाना की जिंदगी में अपनाना बहुत जरूरी है और इसको नजरअंदाज करने से हमारे जीवन में बहुत से सड़क हादसे हो सकते हैं। दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट जरूर पहने, घर से निकलते समय वाहन के पूरे कागजात चेक करें व लेट होने की बजाए समय से पहले चले। कार चलाने से पहले सीट बेल्ट जरूर बांधनी चाहिए। सभी को सड़क पर सही साइड पर चलना चाहिए। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करे। उन्होंने कहा कि अभिभावक अपने नाबालिग बच्चों को गाड़ी चलाने न दे अन्यथा पकड़े जाने पर कड़ी कार्रवाई होगी।

रेवाड़ी। शिविर के समापन पर हवन करते हुए। फोटो :हरिभूमि

हवन के साथ योग शिविर का समापन

रेवाड़ी। शहर के सेक्टर-3 स्थित तिकोना पार्क में चल रहे निःशुल्क योग शिविर का शनिवार को समापन हो गया। पतंजलि योग समिति महिला जिला प्रभारी सरोज आर्या के नेतृत्व में आयोजित निःशुल्क योग शिविर के समापन पर हवन किया गया। पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी दयाराम आर्य ने कहा कि हमे नियमित रूप से योग प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने योग प्राणायाम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग प्राणायाम के साथ छोटी छोटी योग क्रियाएं हमारे तन और मन को स्वस्थ रखती है। योग शिक्षिका सावित्री देवी ने योग प्राणायाम के साथ ताड़ासन, वृक्षासन सहित अनेक आसनों का अभ्यास कराते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राजपाल, सुनीता, बिमला, शकुंतला, राखी ,नीलम, सरोज, संतोष, राजरानी, इंद्रा, ऋतु, अंजू, सांवत, पूनम, कमला, भतेरी, कोमल व आकांक्षा, मौजूद रही।

आंगनबाड़ी, आशा व मिड-डे मील वर्करों का मांगों को लेकर प्रदर्शन, सीएम के नाम सौंपा ज्ञापन

- सभी यूनियनों के कार्यकर्ताओं ने नेहरू पार्क में एकत्रित होकर सभा की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते हुए स्कीम वर्कर्स। फोटो :हरिभूमि

केंद्रीय श्रमिक संगठन एआईयूटीयूसी के आह्वान पर अखिल भारतीय मांग सप्ताह के तहत शनिवार को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका यूनियन, आशा कार्यकर्ता यूनियन, मिड-डेमील कार्यकर्ता यूनियन व भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के कार्यकर्ताओं ने शहर में प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री के नाम डीसी को ज्ञापन सौंपा। इससे पहले सभी यूनियनों के कार्यकर्ताओं ने नेहरू पार्क में एकत्रित होकर सभा की। इस अवसर पर एआईयूटीयूसी के राज्य प्रधान कॉमरेड राजेन्द्र सिंह ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार श्रमिक विरोधी नीतियों को लागू करके मजदूरों के जनवादी अधिकारों को छीन रही है। 29 श्रम कानूनों को समाप्त करके चार लेबर कोड लागू किए जा रहे हैं, जिसमें श्रमिकों को यूनियन बनाने, आठ घंटे कार्य दिवस व आंदोलन के माध्यम से अपने हकों को हासिल करने के अधिकारों को समाप्त किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार स्कीम वर्कर्स में आशा, आंगनबाड़ी व मिड-डेमील वर्करों को सरकारी कर्मचारी घोषित नहीं कर रही है तथा उन्हें न्यूनतम वेतन तक नहीं दिया जा रहा है। मिड-डेमील कुक को साल में केवल दस महीने का ही मानदेय दिया जाता है। जोकि बारह महीने का दिया जाना चाहिए। कॉमरेड राजेन्द्र सिंह ने कहा कि भवन निर्माण के मिस्त्रियों-मजदूरों को हितलाभ नहीं दिया जा रहा है व शर्तें थोपकर मजदूरों का रजिस्ट्रेशन तक नहीं किया जा रहा है। इस मौके पर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका यूनियन की जिला प्रधान तारा देवी, आशा कार्यकर्ता यूनियन की जिला कार्यकारी अध्यक्ष पिंकी शर्मा, मिड-डेमील कार्यकर्ता यूनियन की नेत्री बीना पाल्हावास, भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के जिला अध्यक्ष अशोक कुंभावास, पूर्व मुख्याध्यापक हरिओम, भीम सिंह, प्रदीप, सरदार सिंह तुर्कियावास, भावना खोल, मुकेश देवी, बीना मोहदीपुर व आशा रानी सहित अनेक स्कीम वर्कर्स मौजूद थे।

गंगायचा अहीर राजकीय स्कूल में स्टेम मेले का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। स्टेम मेले में अपने मॉडल दिखाते हुए विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

राजकीय माध्यमिक विद्यालय गंगायचा अहीर में स्टेम मेले का आयोजन किया गया। विद्यालय प्रभारी सुनील कुमार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच पूजा यादव ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की, जबकि पतंजलि योग समिति जिला प्रभारी दयाराम आर्य व प्रवक्ता विक्टोरिया यादव विशिष्ट अतिथि थे। अतिथियों ने स्टेम मेले का अवलोकन कर विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए मॉडल्स की सराहना की। विद्यालय प्रभारी सुनील कुमार ने कहा कि स्टेम मेला कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में विज्ञान से जुड़े कौशल और समझ विकसित करना होता है। अतिथिओं ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर समस्त विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

रेवाड़ी। स्टेम मेले में मौजूद शिक्षक व विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

विद्यार्थियों ने स्टेम मेले में प्रदर्शित किए मॉडल

रेवाड़ी। राजकीय उच्च विद्यालय बोहतवास अहीर में स्टेम मेले का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने साइंस और मैथ्स से संबंधित गतिविधियों में भाग लिया। विद्यार्थियों ने मृदा अपरदन, पिन हाल कैमरा, स्ट्राच परीक्षण, कोणों के प्रकार, अम्ल-क्षार परिक्षण, क्लाइडोस्कोप-पेरिस्कोप व ज्वालामुखी के मॉडल बनाकर अपनी प्रस्तुति दी। एसएमसी के सदस्यों ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सहराना की। क्लस्टर एबीआरसी कृष्ण कुमार ने मेले का निरीक्षण किया। स्कूल प्रभारी संदीप कुमार ने विज्ञान अध्यापिका संतोष यादव व गणित अध्यापक नरेन्द्र कुमार के प्रयासों व छात्रों की मेहनत की प्रशंसा की। इस अवसर पर सुनील कुमार, निशा यादव, योगेश कुमारी, मुकेश कुमार, सुरेन्द्र सिंह व अशोक कुमार सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

विद्यार्थियों ने विज्ञान व गणित के 50 मॉडल्स का किया प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

विद्यार्थियों की विज्ञान एवं गणित विषय में रुचि उत्पन्न करने के लिए शिक्षा विभाग की ओर से चलाए जा रहे कार्यक्रम के तहत राजकीय माध्यमिक विद्यालय किशनगढ में स्टेम मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुंदर सिंह एपीसी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में बिरेन्द्र कुमार गुप्ता बाबूराम सिंह, सुरेश चौधरी च्व देवेन्द्र यादव ने शिरकत की। मेले में पहली बार प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। विद्यार्थियों ने विज्ञान अध्यापिका सरला व डा. राजकुमार एचटी के नेतृत्व में विज्ञान, गणित व तकनीक एवं अभियंत्रिकरण विषयों पर करीब 50 मॉडल प्रदर्शित किए। इस अवसर पर गांव किशनगढ के सरपंच व पंचायत के सदस्यों ने विद्यार्थियों के मॉडल्स की प्रशंसा की। विद्यालय के मुखिया नवीन खोला ने कहा कि स्कूल में जिले का सबसे उत्कृष्ट जैविक किचन गार्डन है और विद्यालय सब्जियों के मामले में लगभग आत्मनिर्भर है। उन्होंने अतिथियों को किचन गार्डन का निरीक्षण कराकर जैविक खेती की जानकारी दी।

युवा क्लब की दौड़ प्रतियोगिता में मोहन बने विजेता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

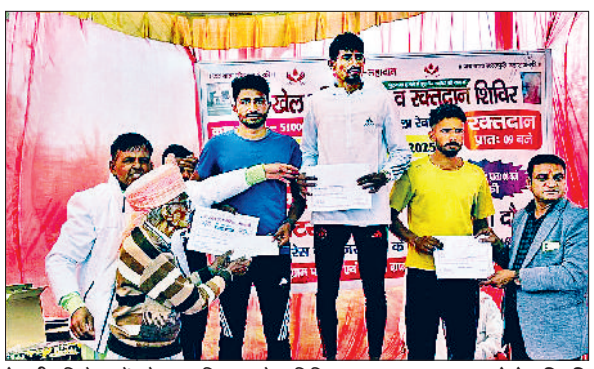

रेवाड़ी। विजेताओं को सम्मानित करते अतिथि। फोटो :हरिभूमि

भाकली गांव में युवा क्लब की ओर से शनिवार को दौड़ प्रतियोगिता एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। क्लब के राष्ट्रपाल ने बताया कि 1600 मीटर की दौड़ में 70 खिलाड़ियों ने भाग लिया। गांव के सबसे बुजुर्ग राम सिंह ने क्लब की ओर से दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले आदमपुर के खिलाड़ी मोहन को चार हजार रुपये, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले भिवानी के खिलाड़ी धोनी को 3500 तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सेका गांव के खिलाड़ी बबलू को तीन हजार रुपये की राशि पुरस्कार में दी। रक्तदान शिविर में रक्त एकत्रित करने के लिए एम्स बाढसा से डॉ. दीपिका की टीम मौजूद रही। शिविर में 75 रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। डॉ. दीपिका ने कहा कि रक्तदान मानवता की सेवा में अनमोल योगदान है। रक्त को कृत्रिम रूप से तैयार नहीं किया जा सकता। इसे केवल रक्तदाताओं के सहयोग से ही प्राप्त किया जा सकता है। गांव के सरपंच श्याम सिंह, सूबेदार सुरेश, सतीश, सूबेदार मेजर कृष्ण, राय सिंह, श्रद्धानंद व राजेंद्र सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

बच्चों ने राष्ट्रपति भवन का किया शैक्षणिक भ्रमण

- भ्रमण का उद्देश्य बच्चों के ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि करना और जागरूकता लाना
- बच्चों ने संग्रहालय में रखे प्रथम राष्ट्रपति के कपड़े, पुस्तकें चश्मा व अन्य संबंधित चीजों के प्रति रुचि दिखाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। दिल्ली में भ्रमण के दौरान मौजूद विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

राज इंटरनेशनल स्कूल की कक्षा छठी व सातवीं के बच्चों का दिल्ली में राष्ट्रपति भवन का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। भ्रमण का उद्देश्य बच्चों के ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि करना और जागरूकता लाना था। सबसे पहले छात्रों ने राष्ट्रपति भवन का भ्रमण किया और संग्रहालय के विषय में संपूर्ण जानकारी हासिल की। बच्चों ने राष्ट्रपति की दिनचर्या व उससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी पर जिज्ञासा व्यक्त की। बच्चों ने संग्रहालय में रखे प्रथम राष्ट्रपति के कपड़े, पुस्तकें चश्मा व अन्य संबंधित चीजों के प्रति रुचि दिखाई। इसके बाद बच्चों ने अमृत उद्यान की सैर की। इसके बाद बच्चों को शहीदों की याद दिलाने वाला स्थल इंडिया गेट का भ्रमण कराया गया। सभी छात्रों के लिए यह भ्रमण आनंददायक व प्रेरणा स्रोत था। विद्यालय के निदेशक नवीन सैनी ने कहा कि यह शैक्षणिक भ्रमण इंटरप्रेन्योर में ज्ञान अर्जित करने वाले बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस तरह के भ्रमण के दौरान उधमिता क्षेत्र के बच्चों में आत्मविश्वास की भावना के साथ-साथ बेहतर तालमेल की दक्षता में भी वृद्धि होती है।

सूचना

मैं, आनंद सिंह पुत्र श्री मुन्शी सिंह निवासी ग्राम रतनथल तह कोसली जिला रेवाड़ी हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र सौरभ सिंह मेरे कहने सुनने से बाहर है तथा अपनी मनमानी करता है। मैं उसे अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। आज के बाद मेरा उससे कोई संबंध व वास्ता नहीं रहेगा। कोई व्यक्ति उससे किसी प्रकार का लेनदेन अथवा व्यवहार करता है तो उसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी कोई जिम्मेदारी नही होगी।

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत नया गांव (जाटों वाला) भगत जी कालोनी के साथ वाले रास्ता नं-631 में दस शीशम के पेड़ की दिनांक 18.02.2025 प्रातः 10 बजे पंचायत घर में बोली लगाई जाएगी। बोली मु. 1464 से शुरू की जाएगी। बाकी शर्तें मौके पर बताई जाएगी।

हस्ता/-सरपंच
ग्राम पंचायत नया गांव
खण्ड नाहड़ (रेवाड़ी)

रेवाड़ी। थ्री लैग रेस में भाग लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद अतिथि व कॉलेज स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

मुख्यातिथि पैरालंपियन गिरजि सिंह विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए बोले-खेलों में स्वर्णिम भविष्य बनाया जा सकता

गर्ल्स कॉलेज में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में छात्राओं ने दिखाया दमखम, अफसाना चुनी गई बेस्ट एथलीट

■ दो दिवसीय 16वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सेक्टर 18 स्थित प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय में शनिवार को दो दिवसीय 16वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का समापन हो गया। इस अवसर पर पैरालंपियन व वर्तमान में गुरुग्राम जोन मे खेल उपनिदेशक पद पर कार्यरत गिर्राज सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। मुख्य अतिथि ने कहा कि वर्तमान समय में हरियाणा सरकार की खेलों

रेवाड़ी। बेस्ट एथलीट अफसाना मेडल दिखाते हुए। फोटो : हरिभूमि

के प्रति जो नीति है, उसे देखते हुए खेलों में स्वर्णिम भविष्य बनाया जा सकता है। उन्होंने महाविद्यालय में खेल संबंधी सभी सुविधाएं

रेवाड़ी। 100 मीटर दौड़ में भाग लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया तथा इसके लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में एथलेटिक कोच डा. अनिल कुमार, एथलेटिक कोच डा.धर्मेंद्र व फुटबॉल कोच चरण सिंह उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्राचार्या डा. ज्योति यादव ने छात्राओं को मुख्यातिथि के ग्रामीण परिवेश से उठकर एक सफल खिलाड़ी व कुशल प्रशासक बनने तक के संघर्षपूर्ण जीवन के विषय में बताते हुए उनसे सीख लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने छात्राओं को पढ़ाई के साथ-साथ अन्य सभी क्षेत्रों में भी हर संभव सुविधा देने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

कार्यक्रम के संयोजक व महाविद्यालय के खेल प्रभारी डा. नरेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता के दूसरे दिन जेवलिन थ्रो, 1500 मीटर दौड़, 4 गुणा100 मीटर रिले रेस, 100 मीटर, 200 मीटर दौड़, 3 लैग रेस, लेमन रेस व फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। मुख्य अतिथि तथा प्राचार्या की टीम के बीच में मनोरंजन गतिविधि रस्साकशी का आयोजन किया गया। बीकॉम फाइनल ईयर की छात्रा अफसाना के श्रेष्ठ प्रदर्शन को देखते हुए बेस्ट एथलीट घोषित किया गया। विजेता छात्राओं को मुख्य अतिथि व प्राचार्या ने सम्मानित करते हुए नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने महाविद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में विजेता रही छात्राओं को भी सम्मानित किया। रेडक्रॉस स्वयंसेवकों को विशेष तौर पर सम्मानित किया गया। डा. यशपाल सिंह व डा. सुनीता यादव के मंच संचालन में हुए कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी स्टाफ सदस्यों ने सहयोग दिया।

यह रहे प्रतियोगिता के परिणाम

प्रतियोगिता की 200 मीटर दौड़ में अफसाना प्रथम, तनु द्वितीय व अंजू तीसरे स्थान पर रही। 1500 मीटर रेस में अफसाना प्रथम, रिंकू द्वितीय व खुशी तृतीय तथा 100 मीटर रेस में अफसाना ने प्रथम, तनु ने द्वितीय व खुशी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। थ्री-लैग रेस में पूजा व साक्षी ने प्रथम, प्रियंका व खुशी ने द्वितीय तथा तनु, रिंकू, आरती व अनु ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

रेवाड़ी। स्टेम मेले का अवलोकन करते अतिथि व शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

स्टेम विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित का एक संक्षिप्त शब्द: प्रेमचंद

रेवाड़ी। राजकीय माध्यमिक विद्यालय जाट भुरथल में स्टेम मेले कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौलिक मुख्याध्यापक प्रेमचंद की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य मनोज कुमार राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। मुख्य अतिथि ने स्टेम मेले का अवलोकन कर विद्यार्थियों से मॉडलों से संबंधित प्रश्न पूछे। प्राचार्य ने विद्यार्थियों की ओर से बनाए गए मॉडल्स की सराहना करते हुए कहा कि स्टेम मेला कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी स्टेम संबंधित परियोजनाओं और विचारों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना है, ताकि नवाचार, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा दिया जा सके। मौलिक मुख्याध्यापक प्रेम चंद ने बताया कि स्टेम विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित का एक संक्षिप्त शब्द है, जोकि इन चारों विषयों को संरचित कार्यक्रम में जोड़ने का एक तरीका है, जिसका मकसद विद्यार्थियों को विज्ञान से जुड़े कौशल और समझ विकसित करना होता है। इस मौके पर अतिथियों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए पुरस्कार भी प्रदान किए।

पर्यावरण सरंक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा गोल्डन लॉयनेस क्लब : रुस्तगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

गोल्डन लॉयनेस क्लब की बैठक बीएमजी मॉल परिसर में आयोजित की गई। क्लब की प्रधान उषा रुस्तगी की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में क्लब की गतिविधियों पर चर्चा की गई तथा आगामी 22 मार्च को होने वाले क्लब के वार्षिक स्थापना दिवस समारोह को लेकर क्लब की सदस्याओं की जिम्मेदारी भी तय की गई। इस अवसर पर क्लब की प्रधान उषा रुस्तगी ने कहा कि गोल्डन लॉयनेस क्लब समाज कल्याण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा

रेवाड़ी। बैठक में मौजूद गोल्डन क्लब की सदस्याएं। फोटो : हरिभूमि

है, जिसके लिए सभी सदस्याएं बधाई की पात्र हैं। उन्होंने कहा कि क्लब ने समय-समय पर अपने मुख्य कार्यक्रम के तहत पर्यावरण सरंक्षण एवं शिक्षित समाज को ध्यान में रखते हुए पौधारोपण व शिक्षा के क्षेत्र में कई कार्यक्रम का आयोजन कर लोगों को इनके प्रति जागरूक करने का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त असहाय बच्चों को भोजन व वस्त्र प्रदान करने के अलावा रक्तदान शिविर व स्वच्छता अभियान में भी अपनी महत्वपूर्ण भागेदारी की है। उन्होंने कहा कि आगामी 22 मार्च को क्लब अपना वार्षिक स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाएगा। इस समारोह में विशेष रूप से क्लब की डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट वेद कुमारी, उपप्रधान वीना साहनी व उनकी टीम के साथ-साथ रीजन चेयरपर्सन वीना चौधरी व एरिया चेयरपर्सन दुर्गेश अग्रवाल सहित क्लब की अन्य पदाधिकारी व सदस्याएं भाग लेंगी। स्थापना समारोह में क्लब का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाएगा वही सराहनीय कार्य करने वाली सदस्याओं को सम्मानित भी किया जाएगा। क्लब की मेंटोर डा. तृप्ति भार्गव व क्लब की पूर्व प्रधान रत्ना गोयल ने भी अपने विचार रखे।

मौजूद रहे

बैठक में संतोष गुप्ता, प्रमिला भार्गव, कुसुम शर्मा, मधु भार्गव, निर्मल यादव, जयमाला शर्मा, सरिता अग्रवाल, अनुजा खुराना, मोनिका पण्डिता, पूनम शर्मा व रीटा भार्गव मौजूद थी।

सरस्वती स्कूल में माता-पिता पूजन दिवस आयोजित

रेवाड़ी। स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते बच्चे व अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। गांव चिमनावास स्थित सरस्वती पब्लिक स्कूल में शनिवार को माता-पिता पूजन दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बच्चों ने अपने माता-पिता व दादा-दादी की पूजा की। अभिभावकों ने अपने अनुभव सांझा करते हुए बच्चों को निरंतर पढ़ाई के साथ-साथ खेलों की ओर भी प्रेरित किया। स्कूल के प्रिंसिपल प्रमोद कुमार सिंह ने सभी अभिभावकों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि बच्चों के सर्वप्रथम गुरु माता-पिता ही होते हैं। हमें माता-पिता का निरंतर आदर करना चाहिए और उनके द्वारा बताई गई बातों पर अमल करना चाहिए। इस मौके पर पंकज कुमार सिंह, पवन कुमार, प्रवीण कुमार, सुदेश कुमार, तेजभान, कविता, राजबाला, पूनम व सपना उपस्थित थे।

रेवाड़ी। स्टेम मेले में शिक्षकों के साथ विद्यार्थी।

स्टेम मेले में अंतिम, रक्षित व शिवानी के मॉडल रहे चर्चित

नाहड़। शहीद धर्मसिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लुखी में शनिवार को स्टेम यानि साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग एंड मैथेमेटिक्स मेले का आयोजन किया गया। इस मौके पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने स्व-निर्मित विभिन्न मॉडलों का प्रदर्शन किया गया। मेले में 32 विद्यार्थियों ने अपने मॉडल प्रदर्शित किए। छात्रा अंतिम का मॉडल स्मार्ट ग्लूकोज मीटर, छात्र रक्षित का मॉडल हाइड्रोलिक मशीन व छात्रा शिवानी का मॉडल फिंगर ज्वायंट अत्यधिक चर्चित रहे। विज्ञान शिक्षिका प्रेरणा यादव ने विद्यार्थियों को विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से जादू, अंधविश्वास एवं विज्ञान के बारे में जानकारी दी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान हुसैनपुर के विषय विशेषज्ञ निरेनपाल ने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की प्रशंसा की। विद्यालय की प्राचार्या उमा यादव ने कहा कि विद्यालयों में स्टेम मेले का आयोजन कराना एक दूरदर्शी सोच का परिणाम है, स्टेम मेलों के आयोजन से भविष्य में हमारे स्कूलों से अगणित वैज्ञानिकों का निकला तय है। वरिष्ठ प्रवक्ता श्रीभगवान बव्वा, राजपाल यादव, अमित सोलंकी, अंजू बाला, कैलाश चंद, कविता शर्मा, कैलाश चंद्र, उमेद सिंह डीपीई, सरोज यादव, मुकेश कोहारड़, मधु यादव,अंशु यादव, मनोज नठेड़ा, कुलदीप सिंह मौजूद थे।

रक्तदान के क्षेत्र में योगदान देने पर विजय गुड़ियानी को मिला सम्मान

रेवाड़ी। विजय गुड़ियानी को सम्मानित करते केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा। फोटो : हरिभूमि

कोसली। हरियाणा के झज्जर जिले में स्थित नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट एम्स बाढ़सा की स्थापना के 6 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने संस्थान का दौरा किया। इस अवसर पर विजय एकता मंच के विजय गुड़ियानी को रक्तदान के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया। समाजसेवी विजय गुडियानी की अध्यक्षता में विजय एकता मंच द्वारा पिछले दो महीनों में 7 ब्लड डोनेशन कैंप आयोजित कर 478 यूनिट रक्त एम्स बाढ़सा में उपलब्ध कराया जा चुका है, जिससे कैंसर पीड़ितों को बहुत अधिक सहायता मिली है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने विजय गुड़ियानी की समाजसेवा की भावना की सराहना करते हुए कहा कि उनका यह कार्य मानवता की एक मिसाल है। राष्ट्रीय स्तर पर विजय गुड़ियानी को सम्मानित किया जाना न केवल कोसली क्षेत्र बल्कि पूरे हरियाणा के लिए गर्व की बात है।

रेस्टोरेंट संचालक से चौथ मांगने पर केस दर्ज

रेवाड़ी। शहर थाना पुलिस ने रेस्टोरेंट संचालक से चौथ मांगने पर एक के खिलाफ केस दर्ज किया है। धारूहेड़ा चुंगी निवासी संदीप ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसने सेक्टर-4 में हेल्थ बुस्टर के नाम से रेस्टोरेंट खोला हुआ है। संदीप ने मोहल्ला संघी का बास निवासी राजकुमार उर्फ झोटा पर रंगदारी मांगने का आरोप लगाया है। संदीप ने पुलिस को बताया कि 7 फरवरी को राजकुमार उर्फ झोटा ने उसके मोबाइल नंबर पर व्हाट्सएप कॉल करके चौथ की मांग की। राजकुमार उर्फ झोटा एक आपराधिक प्रवृति का व्यक्ति है तथा रंगदारी के लिए उसको धमकी दे रहा है, जिससे उसे जान व माल का खतरा बना हुआ है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हाउसकीपिंग करने का झांसा देकर ठगी करने का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। साइबर थाना पुलिस ने सोशल मीडिया पर हाउसकीपिंग सेवाएं प्रदान करने का झांसा देखकर ठगी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान राजस्थान के जिला भरतपुर के गांव हेलक हाल किरायेदार कोन्डवा बुद्रक पुणे महाराष्ट्र निवासी विक्रम सिंह के रूप में हुई हैं। गत 14 फरवरी को मूल रूप से पश्चिम बंगाल हाल आबाद हाउसिंग बोर्ड सेक्टर-3 निवासी देवव्रत गांगुली ने अपनी शिकायत में बताया था कि उसने सोशल मीडिया पर एक हाउसकीपिंग सेवाएं प्रदान कराने वाला एक विज्ञापन देखा था। पीड़ति ने बताया कि जब उसने विज्ञापन में दिए गए नंबर पर संपर्क किया, तो उसे पंजीकरण शुल्क के रूप में 30 हजार रुपये जमा कराने के लिए कहा गया। रुपये जमा कराने के बाद आरोपी ने उससे धीरे-धीरे संवाद करना बंद कर दिया और कॉल का जवाब भी देना बंद कर दिया। जांच के बाद पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक आरोपी विक्रम सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से वारदात में प्रयोग किया गया मोबाइल फोन व सिम कार्ड बरामद कर लिया है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में ठगी का आरोपी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

जागरूक बावल के बनीपुर चौक पर फॉयर एवं अग्निशमन सेवा केंद्र में फायर सेफ्टी कार्यक्रम

आमजन की उम्मीदों पर खरा उतर कर अपने दायित्व को निभाएं चालक व फायरमैन : कालरा

रेवाड़ी। कार्यक्रम में मॉकड्रिल करते हुए फायर कर्मी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। जॉइट डायरेक्टर को सलामी देते अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

■ बावल में रीजनल सेंटर बनाया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बावल

बावल कस्बे के बनीपुर चौक पर फॉयर एवं अग्निशमन सेवा केंद्र में फायर सेफ्टी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे मुख्य अतिथि जॉइट डायरेक्टर टेक्निकल गुलशन कालरा थे। इस मौके पर फायर एवं अग्निशमन कर्मियों की ओर से मॉकड्रिल की गई। फायर टेनिंग सेंटर व फायर स्टेशन आईएमटी बावल में फायर ऑपरेटर कम ड्राइवर बैच के प्रशिक्षण पूरा होने पर समापन सामारोह आयोजि किया गया। 43 कर्मियों का प्रशिक्षण कार्य पूरा हुआ हैं, जिसमें आग को बुझाने, लींकेज को रोकने, हादसे में घायलों की मदद करने व दुर्घटना होने पर वाहनों के नीचे घायलों को निकालने सहित अनेक डेमो दिखाए गए। मुख्य अतिथि जॉइट डायरेक्टर टेक्निकल गुलशन कालरा को सलामी भी दी गई और अधिकारियों ने स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि फायर एवं आपातकालीन विभाग के कर्मियों को लोग उम्मीद से देखते हैं। प्रशिक्षण के बाद सभी का स्टेशन अलॉट हो चुका हैं, इसलिए आमजन की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करे व चालक व फायरमैन को मिले दायित्व को निभाएं। उन्होंने कहा नशे से दूर रहे, नशा परिवार समाज और राष्ट्र के लिए घातक हैं। उन्होंने बताया कि 26 एकड़ जमीन जींद मे ली गई हैं, जिसमें प्रशिक्षण केंद्र बनाया जाएगा। बावल में रीजनल सेंटर बनाया जाएगा। इस अवसर पर फायर अधिकारी नरेंद्र कुमार, नितेश भारद्वाज, डिप्टी अधिकारी मामचंद शर्मा, मानेसर सब अधिकारी राकेश, रमन सिंह, धर्मपाल, संजय व पवन कुमार सहित अनेक कर्मचारी मौजूद थे।

रेवाड़ी। मीरपुर स्थित इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय। फोटो : हरिभूमि

आईजीयू में नवाचार सांख्यिकी एवं वैज्ञानिक कंप्यूटिंग पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 5 व 6 मार्च को

रेवाड़ी। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर में आगामी 5 व 6 मार्च को गणित विभाग और कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विभाग, राव मोहर सिंह चेयर और विश्वसनीयता और सांख्यिकी के लिए भारतीय संघ की ओर से प्रायोजित हरियाणा राज्य विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में गणित में हालिया रुझान और नवाचार सांख्यिकी और वैज्ञानिक कंप्यूटिंग विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। राव मोहर सिंह पीठ पर आसीन और अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रोफेसर मंजू परुथी ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर जयप्रकाश यादव एवं कुलसचिव प्रोफेसर दिलबाग सिंह के मार्गदर्शन में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसका मुख्य उद्देश्य गणित, सांख्यिकी में हालिया रुझानों और नवाचारों पर ध्यान केंद्रित करना है और वैज्ञानिक कंप्यूटिंग और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके अनुप्रयोग के साथ युवाओं को एक साथ लाने के लिए एक साझा मंच प्रदान करना है।

यह सम्मेलन शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, अभ्यासकर्ताओं और कॉर्पोरेट कर्मियों के अकादमिक ज्ञान को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी, समसामयिक रुचि एवं विषय-वस्तु के आधार पर सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सम्मेलन में छात्रों-शोध विद्वानों, शिक्षाविदों से मूल और अप्रकाशित शोध पत्र आमंत्रित किए गए हैं। उद्योग विशेषज्ञ विशिष्ट क्षेत्रों में अपनी प्रेजेंटेशन प्रस्तुत करेंगे। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समन्वयक डा. महावीर बड़क ने बताया कि इस सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी 28 फरवरी तक अपने शोध कार्य का सारांश पंजीकरण के साथ भेज सकते हैं।

बदलते दौर के साथ बदलती लाइफस्टाइल, शामिल होती टेक्नीक और नई सोच के आधार पर अलग-अलग जेनरेशन का नामकरण किया जाता रहा है। इसी सीरीज में विगत 1 जनवरी से जेनरेशन अल्फा को पछाड़कर, जेन बीटा वजूद में आया है। यह जेनरेशन अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे अलग है, इसकी क्या खासियतें होंगी, जानना बहुत दिलचस्प है।

जेन अल्फा भी हुई पुरानी
आ गई जेनरेशन बीटा

{ कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम }

जेनरेशन बीटा यानी जेन बीटा का आगमन हो चुका है। विगत 31 दिसंबर 2024 को न्यू जेनरेशन की कुर्सी से जेन अल्फा को उतार दिया गया और 1 जनवरी 2025 को इस पर जेन बीटा को बैठा दिया गया। जो लोग कुछ कंफ्यूज हो रहे हों, उन्हें बता दें कि जेन बीटा एक अनुमानित पीढ़ी (हाइपोथीसियल टेक्नोजेनरेशन) है, जो 1 जनवरी 2025 से शुरू हो चुकी है और उसके पहले तक जो जेन अल्फा थी, वह भी एक अनुमानित पीढ़ी ही थी, जिसका वक्त 31 दिसंबर 2024 से खत्म हो गया।

डिफरेंट जेनरेशन का कॉन्सेप्ट

यह एक निश्चित समय अवधि के तकनीकी विकास, जीवनशैली, काम-काज, सोच और भविष्य दृष्टि को इस समय अवधि में पैदा होने वाली पीढ़ी के जरिए देखने का तरीका है। दूसरे शब्दों में यह समाजशास्त्रीय चश्मे से एक निश्चित समय अवधि और उस अवधि में पैदा हुए लोगों के जरिए दुनिया को देखने की नजर है। यह सिलसिला यूं तो पिछली सदी के 50 के दशक से ही शुरू हो गया था, जब उस दौर की नई पीढ़ी को हिप्पी या यिप्पीज के रूप में चिन्हित किया जाने लगा था। लेकिन सही मायने में 80 के दशक से यह सिलसिला शुरू हुआ, जब अलग-अलग समय अवधि को उस दौरान दुनिया में आई नई पीढ़ी के जरिए देखने की शुरुआत हुई। इसलिए इन पीढ़ियों के कृत्रिम विभाजन को इस तरह जानने और पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए कि अलग-अलग दशकों की, अलग-अलग पीढ़ियों की आखिरकार खूबियां क्या हैं? कुल मिलाकर जब इस नजरिए से हम जेन बीटा की बात करते हैं तो फिलहाल इसका मतलब यह अनुमान लगाने से है कि जेनरेशन बीटा यानी 2025 से पैदा होने वाली नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे भिन्न होगी?

ऐसी होगी जेन बीटा

चूंकि जेनरेशन बीटा, पूरी तरह से सुपर टेक्नोलॉजी युग में पैदा हो रही है, इसलिए यह टेक्नोलॉजी में इनोवेटेड लाइफस्टाइल वाली जेनरेशन होगी। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, रोबोटिक, ऑगमेंटेड रिएलिटी/वर्चुअल रिएलिटी और लाखों तरह की स्मार्ट डिवाइसेस, इस पीढ़ी की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा होंगी। यह पहली ऐसी जेनरेशन होगी, जिसके सोचने, समझने, बर्ताव करने और समग्रता से जीवन जीने की सभी प्रक्रियाओं में टेक्नोलॉजी की भरमार होगी।

हाइपर कनेक्टेड जेनरेशन

जेन बीटा वह पीढ़ी होगी, जो लगभग पूरी दुनिया से एक साथ फिजिकल भी और वर्चुअल भी, एक ही समय पर कनेक्ट होगी। लेकिन संकट यह होगा, चूंकि इसने दोनों ही दुनियाओं को एक साथ एक ही समय में देखा है, इसलिए यह दोनों में बहुत फर्क नहीं कर पाएगी। यह पीढ़ी दोनों के साथ ही सहज होगी। साथ ही इस जेनरेशन की पहचान, किसी एक संस्कृति की न होकर मल्टी कल्चरल पीढ़ी की होगी। इंटरनेट और ग्लोबलाइजेशन के कारण न सिर्फ यह पीढ़ी, पुरानी किसी भी पीढ़ी के मुकाबले कहीं ज्यादा कल्चरल डायवर्सिटी और ग्लोबल थॉट के साथ बड़ी और खड़ी होगी बल्कि इसके लिए अपनी और पराई संस्कृति में उस तरह से फर्क कर पाना मुश्किल होगा, जैसे अब तक की पीढ़ियां करती रही हैं। इस जेनरेशन में हिंदी बोलने वाले इलाकों के युवाओं के गानों की भी पहली पसंद अमेरिकन और अफ्रीकन रैप हो सकती है और अमेरिकन यंगस्टर्स की भी पसंदीदा मिठाइयों में जलेबी और इमरती शामिल हो सकती है। क्योंकि इस नई बीटा जेनरेशन में कल्चरल अलगाव किसी भी स्तर पर उतना नहीं होगा, जैसा पहले होता रहा है।

ये भी होंगी इनकी खासियतें

यह जेनरेशन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के व्यावहारिक दौर में पैदा होगी, उसी के साथ पलेगी-बढ़ेगी, शिक्षित होगी, हेल्थ और एंटरटेनमेंट की भागीदार भी होगी। यह जेनरेशन पिछली पीढ़ियों के मुकाबले टेक्नोलॉजी की समझ को लेकर इस तरह से अलग होगी कि पिछली पीढ़ियां, जहां नई टेक्नोलॉजी को समझने वाली थीं, वहीं यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी को बदलने वाली होगी। इस पीढ़ी का एक और बड़ा फर्क सबको दिखाई देगा, वह है इस पीढ़ी की परिवार संरचना में आया जबर्दस्त बदलाव। यह पीढ़ी पूरी तरह से डिजिटल परिवार संरचना वाली होगी। इसका पारिवारिक गठन बेहद लचीला होगा, जहां पुरानी सामाजिक संरचनाएं करीब-करीब नहीं मिलेंगी।

कह सकते हैं कि 1 जनवरी 2025 से शुरू हुई जेन बीटा, जेन अल्फा (2010 से 2024) से तो मीलों आगे होगी ही। साथ ही अपनी पूर्वज पीढ़ियों जैसे एक्स, वाई, जेड से तो यह लगभग प्रकाशवर्ष के फासले पर होगी। इसके शायद ही कोई लक्षण उन पीढ़ियों से मिलेंगे। लब्बोलुआब यह कि जेन बीटा अब तक की सबसे मॉडर्न, सबसे ज्यादा ग्लोबल और जीवनशैली के मामले में सबसे तेज रफ्तार होगी। *

एन्वॉयर्नमेंट को लेकर होगी अवेयर

कुछ दशकों पहले तक इंसान को धरती की जिस एक चीज को लेकर बेहद संवेदनहीन देखा गया था, वह पर्यावरण हुआ करता था। पिछली सदी के 50 के दशक में तो जब दूसरे विश्व युद्ध के बाद युद्ध से तहस-नहस दुनिया के पुनर्निर्माण का दौर शुरू हुआ, तो इसकी सबसे बड़ी कीमत पेड़ों, जंगलों, नदियों और समुद्र आदि को चुकानी पड़ी। दरअसल, उस समय यह संवेदना ही नहीं थी कि विकास के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में हर तरह के गंदे और जहरीले पानी को बहाना कहीं से गलत भी है। इसी तरह समुद्र का अंधाधुंध दोहन आदि तो उस समय, विकास और प्रगति की निशानी थी। लेकिन जब इस सबकी अति हो गई तो पता चला कि इंसान ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है और फिर शुरू हुआ पर्यावरण के प्रति संवेदना जगाने का सिलसिला। लेकिन विकास और पर्यावरण विनाश के बीच वैचारिक रूप से फंसी बुनियादी पुरानी पीढ़ियां पर्यावरण के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं हो सकती थीं, जितनी जरूरत थी। लेकिन यह जेन बीटा, पर्यावरण को लेकर बेहद संवेदनशील होगी। यह पैदा होने के साथ ही पर्यावरण के महत्व को समझने के लिए मजबूर होगी और शुरू से ही इसके अनुकूल जीवन जीने की कोशिश करेगी।

समझदारी से करनी होगी
जेन बीटा की पैरेंटिंग

टेक्नोबेस्ड लाइफस्टाइल के बढ़ते चलन की वजह से नई जेनरेशन के बच्चों की पैरेंटिंग भी किसी चैलेंज से कम नहीं है। जेन बीटा के बच्चों की पैरेंटिंग करते समय पैरेंट्स किन बातों का ध्यान रखें, आप सभी को जरूर मालूम होना चाहिए।

{ सजेशन
रजनी अरोड़ा }

इस साल की शुरुआत में मार्क मैक्रिंडल और वैज्ञानिकों द्वारा मानव जगत के इतिहास में नई पीढ़ी 'जेन-बीटा' की घोषणा की गई। यानी पहली जनवरी 2025 के बाद पैदा होने वाले बच्चों को जेन-बीटा का माना गया है। यह वो जेनरेशन है, जो हाई-टेक डिजिटल वर्ल्ड में जन्म ले रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ऑटोमेशन, रोबोटिक्स, मेटावर्स और स्मार्ट डिवाइसेज उनकी जिंदगी का मुख्य हिस्सा होंगे। हालांकि जेन-बीटा के बच्चे दूसरों से अपेक्षाकृत अधिक स्मार्ट और बुद्धिमान होंगे। फिर भी उन्हें जिंदगी के विभिन्न पहलुओं के साथ सामंजस्य बिठाने में कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है। ऐसे में निश्चय ही पैरेंट्स की जिम्मेदारी बढ़ जाएगी। उन्हें खुद अपडेट रहना होगा और पैरेंटिंग की अलग एप्रोच अपनानी होगी ताकि इन बच्चों की ओवरऑल डेवलपमेंट (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक विकास) अच्छी तरह हो सके।

बैलेंस्ड स्क्रीन टाइमः जेन-बीटा बच्चों को छुटपन से ही डिजिटल टूल्स और स्क्रीन का एक्सपोजर मिलेगा। वर्चुअल दुनिया में ज्यादा समय बिताने से उनके शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर हो सकता है। डिजिटल ओवरलोड के कारण बच्चों में फोकस की कमी, नींद की समस्या और आंखों की थकान बढ़ सकती है। ऐसे में पैरेंट्स को टेक्नो-बाउंड्रीज तय करनी होंगी। बचपन से ही बच्चों को स्क्रीन टाइम और रियल लाइफ में बैलेंस बनाने, नियमित रूप से डिजिटल डिटॉक्स करने, नो स्क्रीन जोन का पालन करने, सोने से एक घंटे पहले स्क्रीन बंद करने जैसी हेल्दी हैबिट्स विकसित करनी होंगी। स्क्रीन का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए न करके, सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए करना होगा। दोस्तों से मिलने-जुलने, आउटडोर गेम्स खेलने और फिजिकली एक्टिव रहने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

मेंटल हेल्थ का रखना होगा ध्यानः डिजिटल टेक्नोलॉजी के एक्सपोजर के कारण जेन-बीटा के बच्चों में स्ट्रेस, एंग्जाइटी, अकेलापन जैसी मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पैरेंट्स को अपने बच्चों के भावनात्मक और मानसिक स्तर पर नजर रखनी होगी। दोस्ताना और ओपन कम्युनिकेशन का रवैया अपनाना होगा ताकि बच्चे अपनी भावनाओं और समस्याओं के बारे में खुलकर बात कर सकें। मानसिक रूप से संतुलित और शांत रहने के लिए उन्हें बचपन से ही माइंडफुलनेस आधारित एक्टिविटीज करने और नियमित मेडिटेशन करना सिखाना होगा।

सोशल स्किल्स को बढ़ावा देनाः संभव है कि जेन-बीटा के बच्चों के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वर्चुअल फ्रेंड्स ज्यादा, असल जिंदगी में कम दोस्त होंगे। एआई चैटबॉक्स जैसे ऑनलाइन कम्यूनिकेशन टूल्स का ज्यादा इस्तेमाल करने की आदत उनमें हो सकती है। एकल परिवार के बढ़ते ट्रेंड और वर्किंग पैरेंट्स द्वारा पर्याप्त समय न दे पाने के कारण जेन-बीटा बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव की कमी हो सकती है। जिसके चलते उन्हें नाते-रिश्तेदारों यहां तक कि हम उम्र बच्चों के साथ बातचीत करने, मिलने-जुलने या संबध स्थापित करने में दिक्कत आ सकती है। अकेलेपन का शिकार हो सकते हैं। इसलिए जेन-बीटा बच्चों में इमोशनल बॉन्डिंग और सोशल स्किल विकसित करने के लिए पैरेंट्स को बचपन से ही ध्यान देना होगा। न केवल रिश्तों और नैतिक मूल्य का महत्व समझाने के लिए नियमित तौर पर फैमिली टाइम बिताना होगा, बल्कि रियल वर्ल्ड में सोशल कनेक्शन बनाने को अहमियत देनी होगी। स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों, ग्रुप एक्टिविटीज, आउटडोर एक्टिविटीज करने, दूसरे बच्चों के साथ खेलने, त्योहारों, फैमिली या सोशल गैदरिंग में ज्यादा से ज्यादा शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

क्रिएटिविटी को देना होगा बढ़ावाः जेन-बीटा बच्चों के लिए नई शिक्षण तकनीकों को अपनाना और इंटरैक्टिव लर्निंग तकनीक अधिक प्रभावी होगी। मेमोरी-बेस्ड लर्निंग के बजाय कॉग्निटिव स्किल्स विकसित करनी होगी। यानी रटने की बजाय समस्या को हल करने की क्षमता बढ़ाने और बच्चों में आजीवन सीखने की आदत डालनी होगी। क्रिटिकल-थिंकिंग, प्रॉब्लम-सॉल्विंग, इनोवेशन या क्रिएटिविटी का विकास करना होगा। इसके लिए पैरेंट्स को उन्हें पजल्स, प्रोजेक्ट, दिमागी कसरत वाली एक्टिविटीज ज्यादा करानी होंगी।

डिजिटल सेफ्टी की देनी होगी जानकारीः एआई के जमाने में जेन-बीटा बच्चे को सोशल मीडिया और इंटरनेट के खतरों का सामना भी करना पड़ सकता है। जिसका असर उनकी पर्सनालिटी और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। इससे बचाने के लिए पैरेंट्स को उन्हें सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल सिखाना होगा। उन्हें शुरू से ही साइबरबुलिंग, मिसइंफॉर्मेशन और प्राइवेसी कंसर्न जैसे ऑनलाइन खतरों के बारे में जागरूक करना होगा। पासवर्ड की सुरक्षा, अजनबियों से ऑनलाइन बात न करना, डाटा चोरी से बचाव जैसे साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानकारी देनी होगी। *

(सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली में सीनियर साइकोलॉजिस्ट, डॉ. इमरान नूरानी से बातचीत पर आधारित)

{ गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग' }

बुरा लगता है हर मंजर

कसर छोड़ी नहीं हमने किसी की कद्रदानी में
बुरा लगता है हर मंजर जियादा बद्गुमानी में

समय से पहले मुरझाने लगीं कलियां गुलिस्तां में
नहीं महफूज है खुशबू किसी भी इत्रदानी में

हजारों लहरें इठलाती हैं बलखाती हैं मर्जी से
किनारे चाह कर भी बह नहीं पाते रवानी में

किसी की दास्तां में हम शुरू से आखिर तक थे
कहें क्या रह गए गुमनाम अपनी ही कहानी में

गुलामों के सिवा कोई नजर आया नहीं अब तक
मिला ना एक भी खुद्दार हमको राजधानी में

भरी है गंदगी पूरे शहर में इन दिनों 'नवरंग'
टिकी है सबकी उम्मीदें फकत इक रातरानी में

{ कहानी
शुभदा मिश्र }

उसके एक कान का टॉप्स कहीं गिर गया, वह खोए टॉप्स की गहरी चिंता में डूब गई। ऐसी डूबी कि कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। एक मनोवैज्ञानिक कहानी।

मनमीत रे

मेरा जी धक से रह गया!

डॉ. सक्सेना के क्लीनिक में बैठी थी मैं। ठंड की सुबह। गर्म शॉल से स्वयं को अच्छी तरह ढंके हुए कि सिर से शॉल सरक गई। मैंने सिर फिर ठीक से ढंकना चाहा कि मेरा हाथ कान को छू गया। दाहिना कान। मुझे लगा कि कान का टॉप्स नहीं है। टॉप्स यानी कर्णफूल। मैंने कान अच्छे से टटोला। बायां कान भी टटोल लिया। बाएं में था टॉप्स। दाएं में नहीं।

तत्क्षण शॉल उतार कर देखा। झाड़कर देखा। अपनी साड़ी, ब्लाउज सब अच्छी तरह टटोल कर देखा। शायद कहीं उलझ गया हो। आस-पास देखा। सोफे के नीचे देखा। कहीं गिर गया हो। नहीं कहीं नहीं था। मरीजों से भरा हॉल। सब अपनी परेशानियों में डूबे। गंभीर माहौल। मेरी हलचलों से गंभीरता भंग होती। सो फिर से शॉल अच्छी तरह ढंक सिर झुकाकर बैठ गई। सदमे में घिरी।

कहां गिरा होगा, वह नन्हा-सा चमकीला टॉप्स। घर से निकल कर ऑटो में बैठते समय। ऑटो से उतर कर स्टेशन में। स्टेशन से प्लेटफॉर्म में, ट्रेन में। यहां रायपुर पहुंच कर ट्रेन से उतरते समय, ऑटो में बैठ यहां क्लीनिक आते समय। हर जगह, हर कदम पर तो भीड़-भाड़। हड़बोंग। गिर गया होगा, वह बटन सा छोटा। वस्तु कैसे कह दूं मैं। तिलिस्म है वह तो। अनजान चेहरों की सुंदरता बढ़ाने वाला। असुंदर चेहरों में भी सुंदरता ला दे। निश्चय ही वह किसी सिद्ध कलाकार की गढ़ी कलाकृति। हाय, कहां गया! उस एक अकेले की तो कोई कीमत भी नहीं। पता होता, कहां गिरा है, तो दूसरा भी टपका देती। किसी के काम तो आता।

अपना सदमा और उसकी अंधेरी नियति! अवसाद के काले जल में डूब गई मैं। टॉप्स मां ने दिए थे। मां के आशीर्वाद की तरह साथ लगे रहते। दुख की मारी ऐसे ही आस-पास, बाजार हाट, कहीं भी चली जाती। पर जब किसी 'शुभ मंगल' कार्यक्रम में जाना होता तो मुझे स्वयं अखरने लगता। लगता, सूने कान चेहरे को और सूना बना रहे हैं। कोई पूछ भी देती, 'कानों में कुछ पहना क्यों नहीं?' एक शरारती ने तो एक बार चर्चा ही छेड़ दी कि कानों के जेवर नारी मुखड़े के आवश्यक अंग हैं। गले में चाहे हीरे का हार पहन लो, पर कान सूना, तो हार बेकार।

अजूबाओं को छोड़ दें, तो हर धर्म, हर जाति, हर उम्र की महिलाएं कानों में कुछ न कुछ पहनती हैं, चाहे वह डॉक्टर हों, नर्स हों, पुलिस या सेना में हों, चाहे वह मंत्री ही क्यों न हों। और मेरा मन भी कहने लगा कि वाकई मुझे कान में पहनना चाहिए। मैं एक महिला आभूषण विक्रेता के पास पहुंची कि मुझे मेरी उम्र और व्यक्तित्व के अनुरूप कोई छोटा सा टॉप्स दें। ज्यादा कीमती न हो। उसने बहुत खोजकर इस टॉप्स की जोड़ी को निकाला। बटन-सा छोटा। गोल। परिधि में ज्योति बिंदु से चमकते श्वेत नग। केंद्र में दमकता लाल नगीना। आश्वस्त किया, 'सोने का नहीं है, पर सोने से कम भी नहीं है मैम।'

मैंने देखा, मां के उस खानदानी जड़ाऊ टॉप्स-सा तो नहीं ही, पर है बेचारा एक अच्छा विकल्प।

मैंने उस विकल्प को समुचित आदर दिया। कहीं जाऊं तो प्रेम से पहन लेती। इधर काफी दिनों से मैं बाहर कहीं आती-जाती नहीं थी। वजह थी, पैरों में तकलीफ। जाना जरूरी हो तो किसी को साथ लेना पड़ता। मुझे अपने आस-पास के लोग बहुत व्यस्त नजर आते। बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी। पर वे कहते, 'अकेले जाने का खतरा मत उठाइएगा, हमें खबर कर दीजिएगा।' मैं कहती, 'आप लोग बहुत व्यस्त रहते हैं।' उनका कहना होता, 'इससे क्या, हम समय निकाल लेंगे।' मैं और भी संकोच में पड़ जाती। ये अपने कारोबार से, बीवी-बच्चों से, अपने जरूरी कार्यक्रमों से समय निकालेंगे। मेरे कारण। यह ठीक नहीं। सो मैं जहां जाना जरूरी होता तो किसी को बिना बताए निकल जाती। अभी भी मैं बिना किसी को बताए चली आई थी।

डॉक्टर के पास आना बहुत जरूरी था। कारण आंखों में भीषण तकलीफ। महीने भर से धुंधला दिखने लगा था। अक्षर तो पढ़े ही न जाते। काले धब्बे दिखते। आंखों के भीतर सुई-सा चुभता रहता। सूजन अलग। स्थानीय डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। रायपुर आना पड़ा डॉक्टर सक्सेना के पास। वह प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं। मुलाकात के लिए पहले से ही समय लेना पड़ता है। लिया समय। पहुंची। मरीजों की भीड़। एक तरफ बैठ गई और मुझे घेर लिया टॉप्स के सदमे ने। 'हाय कहां पड़ा होगा बेचारा धूल गर्द खाता। कुछ आभास हो जाए तो अभी दौड़ कर ढूंढ़ लाऊं... कहां होगा...कहां', तभी नर्स ने नाम पुकारा, 'रोशन भाई।' मेरे बगल वाला मरीज उठ कर भीतर गया।

'अरे बाप, इसके बाद मेरा नंबर। मुझे तो कुछ याद ही नहीं आ रहा है डॉक्टर को क्या बताना है।' मेरे दिमाग में तो छाया हुआ है टॉप्स। टॉप्स-टॉप्स और टॉप्स। कैसे छूटे ये टॉप्स? कि जैसे मन ही बोल उठा, 'सच में किसी सहेली को साथ लाना था मुझे।' सहेली होती तो समझाती, 'अरे ऐसा कौन-सा कीमती था। दूसरा ले लेना।' नहीं समझाती तो लताड़ती जमकर, 'इतनी ठंड में मुंह अंधेरे उठकर, गाड़ी-घोड़ा पकड़ कर, गिरते-पड़ते पहुंची हो डॉक्टर के पास। डॉक्टर को यही बताने के लिए कि डॉक्टर साहब मेरा टॉप्स खो गया। ऐसा सुंदर डॉक्टर साहब... कि उसके जैसा...। मूर्ख, एक-एक मिनट कीमती है डॉक्टर का। सैकड़ों लोग लाइन में लगे हैं। भड़केंगे तुम पर। चल बता... तकलीफ कब से शुरू हुई? धुंधला दिखना कब से शुरू हुआ? सूजन कब से आई? कौन सी दवाई डाली थी? पिछले डॉक्टर का पुर्जा...?'

और मैं जल्दी-जल्दी सोचने लगी... मुझे डॉक्टर को क्या-क्या बताना है। *

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

निकट का कथा विशेषांक

लगभग दो दशक से प्रकाशित हो रही पत्रिका 'निकट' का नया अंक-40, कथा विशेषांक है। आकांक्षा पारे काशिव के अतिथि संपादन में आया यह अंक युवा, मध्य और वरिष्ठ पीढ़ी के लेखकों की कहानियों के सुंदर कोलाज जैसा है। वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया की कहानी 'मक्खन खाना घातक है' वृद्धावस्था में भी क्षुद्र आकांक्षाओं से ग्रस्त एक अध्यापक की मनोस्थिति को सामने लाती है तो राजेंद्र दानी ने 'मौत की उलटबांसी' में मृत्यु के भय का सहज और सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। प्रियंका ओम ने अपनी कहानी 'सात साल उनतीस दिन' में अपने पति की क्रूरता को सालों सहने वाली एक स्त्री के मनो-कायांतरण का चित्र उकेरा है। सुशांत सुप्रिय की कहानी 'एक उदास सिंफनी' उदासी से भरी प्रेमकथा के समानांतर कई सामाजिक विमर्श को भी सामने लाती है। अन्य सभी कहानियां भी पठनीय हैं। कुल सत्रह कहानियों के अलावा प्रियदर्शन का नाटक 'एक दिन बदलेगा संसार देखना', विगत वर्ष साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखिका हान कांग पर रश्मि भारद्वाज के लेख समेत मार्टिन जॉन और सुभाष नीरव की लघुकथाओं से यह अंक और समृद्ध हो गया है। *

पत्रिकाः निकट-40 (कहानी विशेषांक),
संपादकः कृष्ण बिहारी, **मूल्यः** 50 रुपए

कल्चरल इवेंट / धीरज बसाक

हर साल की तरह इस साल भी ताज नगरी आगरा में होने वाले भव्य ताज महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। आगामी 18 फरवरी से 2 मार्च तक चलने वाला यह सांस्कृतिक महोत्सव, इस आयोजन का 34वां संस्करण होगा। इस भव्य आयोजन की महत्ता और इस बार की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

बहुरंगी संस्कृति की छटा बिखेरता भव्य ताज महोत्सव

ताज महोत्सव न केवल आगरा या उत्तर प्रदेश बल्कि समूची भारतीय संस्कृति की विविधता को संजोता है और विश्व पटल के सामने इसे प्रस्तुत करता है। इसलिए यह भले ताज महोत्सव के नाम से जाना जाता हो, लेकिन यह वास्तव में समूची भारतीय संस्कृति का विराट महोत्सव होता है। इसमें देश भर के लोक कलाकार और संगीत मर्मज्ञों के साथ हर तरह के कला रसिक आते हैं। इस कारण ताज महोत्सव हाल के दशकों में देश की संस्कृति को सहेजने, संवारने और दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक ताज महोत्सव के दौरान यहां पर्यटन के लिए आना पसंद करते हैं। इस साल आयोजित होने वाले ताज महोत्सव की थीम है-धरोहर। जैसा कि थीम से जाहिर है, ताज महोत्सव में इस बार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाएगा।

दशकों से हो रहा आयोजन

गौरतलब है कि ताज महोत्सव की शुरुआत 1992 में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा की गई थी और इसका उद्देश्य भारतीय कला और संस्कृति की विश्व स्तर पर छटा बिखेरने के साथ-साथ ताजमहल देखने आने के लिए देसी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करना था। इतने वर्षों के बाद कहा जा सकता है कि यह महोत्सव आयोजन के अपने उद्देश्यों में सफल साबित हुआ है।

उत्कृष्ट हस्तशिल्प की प्रदर्शनी

ताज महोत्सव देश का विरल सांस्कृतिक महोत्सव है। इसकी कुछ विशिष्ट खासियतें हैं। आगरा में निर्मित कला और शिल्प ग्राम में आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी भी उनमें से एक है। यहां भारत के कोने-कोने से शिल्पकार अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों का प्रदर्शन करने आते हैं। सहारनपुर की लकड़ी के खिलौने और विभिन्न तरह की नक्काशी की हुई वस्तुएं, खुर्जा के मिट्टी के बर्तन, लखनऊ की चिकनकारी और वाराणसी की रेशम की साड़ियां करीब-करीब हर बार इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण की वस्तुएं होती हैं।

जुटते हैं लोक कलाकार-संगीतज्ञ

ताज महोत्सव में देश भर के लोक कलाकार और शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। इससे महोत्सव की शोभा और भी बढ़ती है। इसे देखने का आनंद लेने के लिए देश-दुनिया से बड़ी संख्या में कला और संगीत के कद्रदान यहां आते हैं। ताज महोत्सव वास्तव में भारत की विविध संस्कृतियों का अद्भुत संगम है।

पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद

कला और संगीत के साथ-साथ ताज महोत्सव, अपने लजीज व्यंजनों के प्रदर्शन के लिए भी जाना जाता है। इस महोत्सव में करीब-करीब सभी राज्यों के पारंपरिक व्यंजनों के स्टॉल लगाए जाते हैं, जहां महोत्सव में आए आगंतुक तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद लेकर आनंदित होते हैं।

इस बार होगा काफी कुछ नया

इस बार का ताज महोत्सव कई नए कार्यक्रमों के साथ होगा, जो इसे पिछले वर्षों के मुकाबले और अधिक रोमांचक और दर्शनीय बनाएंगे। इस महोत्सव में पहली बार इस साल बर्ड फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। हॉट एयर बैलून शो भी इस महोत्सव का हिस्सा होगा। इसके अलावा ड्रोन शो, विंटेज कार रैली और पतंग महोत्सव का आयोजन भी इस बार इस महोत्सव में चार चांद लगाएंगे। पिछले कई सालों से इस महोत्सव में एक साहित्य कोना की भी जरूरत महसूस की जा रही थी। इस साल इस महोत्सव में साहित्य प्रेमियों के लिए भी विशेष कार्यक्रम होंगे। इस महोत्सव का एक बड़ा आकर्षण बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर भी होंगे, जो ओपेन स्पेस मंच पर अपनी सुरीली प्रस्तुति देंगे। सदर बाजार ओपेन स्पेस मंच, यमुना व्यू प्वाइंट, ताज व्यू गार्डन और आई लव सेल्फी प्वाइंट जैसे स्थानों पर भी इस बार महोत्सव के विभिन्न आयोजन संपन्न होंगे। हाल के सालों को देखें तो इस साल का ताज महोत्सव पहले से कहीं ज्यादा भव्य और कहीं ज्यादा विराट आयोजन होगा।

बड़ी संख्या में आते हैं पर्यटक

हाल के सालों में ताज महोत्सव के दौरान यहां पूरे साल में सबसे ज्यादा पर्यटक आते हैं। सच बात तो यह है कि पर्यटकों की भारी आवक को देखते हुए ही इस जश्न को अब पूरे 10 दिन मनाते हैं। पहले यह 10 दिनों तक चलने वाला महोत्सव नहीं होता था। लेकिन इसकी मांग जिस तरह से देशी-विदेशी पर्यटकों के बीच बढ़ी है, उस कारण यह महोत्सव देश की समृद्ध संस्कृति का पर्याय तो बन ही गया है, आगरा शहर की अर्थव्यवस्था का बड़ा स्रोत भी बनकर उभरा है। माना जाता है कि ताज महोत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों से आगरा शहर की आय में भारी वृद्धि होती है। *

तैयार है आयोजन स्थल

हर साल इस महोत्सव के लिए कई महीनों पहले ही भाग लेने वाले कलाकारों का चयन कर लिया जाता है और वे महोत्सव शुरू होने के पहले ही आयोजन स्थल शिल्पग्राम में पहुंचने लगते हैं। इस बार के ताज महोत्सव का आयोजन शिल्पग्राम के साथ-साथ ताज खेमा, ग्यारह सीढ़ी पार्क और फतेहपुर सीकरी सहित कई जगहों पर आयोजित होगा। जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी के मुताबिक आयोजन की सारी तैयारियों को पूरा कर लिया गया है। महोत्सव के दौरान हर तरह की सुरक्षा की चाकचौबंद व्यवस्था का इंतजाम भी किया जा चुका है।

चाहे आप किसी भी सेक्टर/कंपनी में जॉब करते हों, प्रमोशन और इंक्रीमेंट के लिए हार्ड वर्क के साथ-साथ और भी कई बातें मायने रखती हैं। कौन-सी हैं वो बातें, आप जरूर जानना चाहेंगे।

हार्ड वर्क + स्मार्ट स्ट्रेटजी ईजिली मिलेगा प्रमोशन

सेल्फ इंप्रूवमेंट / शिखर चंद जैन

अमित ने अपने कुलीग मुकुंद से जब निराश होकर कहा, 'यार, काम तो हम भी कम नहीं करते। बॉस के दिए हुए सारे प्रोजेक्ट्स टाइम पर पूरे कर देते हैं। फिर भी हम 3 साल से एक ही जगह अटके हुए हैं और यह जतिन हमेशा बाजी मार लेता है। 3 साल में उसे दो बार प्रमोशन मिल गया है। हमारी एक बार भी सैलरी नहीं बढ़ी, जबकि उसकी सैलरी दो बार बढ़ाई गई है।' इस पर मुकुंद ने कहा, 'यार तू समझता नहीं, जतिन काम करने के साथ-साथ उसका बखान भी खूब कर लेता है। यही उसका प्लस प्वाइंट है। जबकि तू चुपचाप काम करके निकल लेता है।'

मुकुंद की बात ध्यान देने वाली है। कॉर्पोरेट सेक्टर की जॉब में प्रमोशन, हार्ड वर्क के साथ-साथ खुद की अच्छी ब्रांडिंग और सही स्ट्रेटजी से मिलता है।

अपने वर्क को हाईलाइट करें: माना कि आप एक मेहनती एंप्लॉई हैं और मन लगाकर काम करते हैं। आप अपने बॉस द्वारा दिए गए कामों और जिम्मेदारियों को बखूबी अंजाम देते हैं। लेकिन इन सबके साथ सबसे जरूरी यह है कि आप जो कर रहे हैं, उसे आपका बॉस कैसे और कितना देख पा रहा है। बॉस को लगना चाहिए कि आप पूरी लगन और निष्ठा से ऑफिस का काम कर रहे हैं। आपको अपने काम का डॉक्यूमेंटेशन करना चाहिए और इसे शेयर भी करना चाहिए। टीम में हर किसी को लगना चाहिए कि आप कंपनी/संस्थान और अपने काम के प्रति समर्पित हैं।

खुद को विश्वसनीय बनाएं: प्रमोशन के लिए मेहनत के साथ लाइमलाइट में बने रहने और खुद को विश्वसनीय साबित करने की कला भी जरूरी है। जो लोग लगातार अपने एंप्लॉयर या बॉस की नजर में बने रहते हैं, उनके द्वारा जताई गई किसी भी चिंता या कंपनी की किसी भी समस्या में खुद आगे बढ़कर काम करने का साहस रखते हैं, उनके प्रमोशन की संभावना बहुत ज्यादा होती है। आपको अपने मैनेजर, एंप्लॉयर या प्रभावशाली अधिकारी के साथ बराबर टच में रहना चाहिए। उन्हें बताएं कि कैसे कंपनी से आप भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं और कंपनी की तरक्की आपकी भी जिम्मेदारी बनती है। यकीन मानिए, इन बातों का जादुई असर होगा।

अपना फ्यूचर विजन शेयर करें: याद रखें किसी भी कंपनी का मालिक या मैनेजर हमेशा अपनी कंपनी को आने वाले समय के ट्रेंड, डिमांड और चुनौतियों के लिए अपडेटेड रखना चाहता है। आपको यह फ्यूचर फोकस्ड साइकोलॉजी समझनी होगी। अगर आप अपने टीम लीडर्स को यह जताने और बताने में कामयाब रहेंगे कि आप एक अपडेटेड एंप्लॉई हैं। लगातार फ्यूचर ट्रेंड, टेक्नोलॉजी और मार्केटिंग स्ट्रेटजी सीखते, समझते रहते हैं तो आप उनकी फेवरेट लिस्ट में रहेंगे। इसके लिए आपको इनकी जानकारी रखनी होगी और उनके साथ डिसकस और शेयर करते रहना होगा। इसका फायदा यह होगा कि वे भले ही आपकी सभी बातें न मानें लेकिन आपके प्रति उनके मन में भरोसा रहेगा और वह आपको प्रमोट करते रहेंगे।

स्पॉटलाइट में बने रहें: ह्यूमन साइकोलॉजी के स्पॉटलाइट इफेक्ट को समझें। इसके तहत आपको न सिर्फ अपनी टीम बल्कि पूरे ऑफिस के कुलीग्स के बीच एक ऐसे व्यक्ति की इमेज बनानी होगी, जो मिलनसार, विनम्र और मददगार स्वभाव का है। साथ ही खुद को एक स्मार्ट टेक सेवी, मेहनती और दूरदर्शी व्यक्ति, एक प्रॉब्लम सॉल्वर के रूप में प्रोजेक्ट करें। इससे कोई आपका समर्थन करे या ना करे लेकिन कोई विरोध नहीं करेगा। आप हमेशा लोगों की नजर में रहेंगे और स्पॉटलाइट में रहेंगे। यह स्ट्रेटजी आपके प्रमोशन में मददगार साबित होगी।

एक्सट्रोवर्ट होना जरूरी: जब आप इंट्रोवर्ट होते हैं, तो आपके बॉस के मन में आपको लेकर क्लेरिटी नहीं रहती है। आप चाहे जितने भी मेहनती क्यों न हों, उनकी नजर और उनके मन से आपका नाम हट जाता है। सुबह से शाम तक अपने ही केबिन में या अपनी चेयर पर न बैठे रहें। ऑफिस में आपको एक्टिव और विजिबल रहना चाहिए और दिन में एकाध बार बॉस या टीम मैनेजर से मिलना चाहिए। आपका स्मार्ट होना और दिखना दोनों जरूरी है। *

न्यू ट्रेंड / संध्या सिंह

आज घर के भीतर से लेकर बाहर हर कहीं बड़ी संख्या में टीनएजर्स और यंगस्टर्स हेडफोंस या ईयरबड्स लगाए देखे जा सकते हैं। इसका ट्रेंड बढ़ने की वजहों पर एक नजर।

यंगस्टर्स के स्टाइल स्टेटमेंट हेडफोंस और ईयरबड्स

हालांकि कोई बिल्कुल सटीक डाटा तो उपलब्ध नहीं है कि देश में कितने युवा हेडफोंस और ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन एक अनुमान के मुताबिक शहरों में रहने वाला हर दूसरा यंगस्टर और गांव में रहने वाला हर चौथा युवा, हेडफोन या ईयरबड का इस्तेमाल कर रहा है। जहां तक इसके इस्तेमाल के वैश्विक आंकड़े की बात है तो एक अध्ययन के मुताबिक साल 2023 के अंत में करीब 1 अरब टीनएजर्स और यंगस्टर्स, ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे थे। दिल्ली, मुंबई, बैंग्लुरु, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद और चंड़ीगढ़ जैसे महानगरों में देखें तो लगता है, घर से बाहर जाने वाला हर युवा कान में ईयरबड्स या हेडफोंस लगाकर रखता है।

वजहें हैं कई: हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर विश्व स्तर पर हुए अनेक अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि भारत या दुनिया के सभी हिस्सों में किशोरों और युवाओं के बीच इस कदर हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर बढ़ा लगाव, महज उनके संगीत प्रेम तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके पीछे कई तरह के दूसरे सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक कारण हैं। आइए, एक-एक करके इन्हें समझने की कोशिश करते हैं।

संगीत प्रेम: निःसंदेह आज की युवा पीढ़ी पिछली शताब्दी की कई पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा संगीत प्रेमी है। आज की युवा पीढ़ी संगीत को अपनी भावनाओं और व्यक्तित्व के साथ जोड़ती है। ये हेडफोंस और ईयरबड्स, उन्हें अपने पसंदीदा गानों को बिना किसी रुकावट और दूसरों को बिना डिस्टर्ब किए सुनने का अनुभव देते हैं, क्योंकि इनके जरिए युवा ऑन डिमांड म्यूजिक विभिन्न एप्स और म्यूजिक चैनलों के जरिए सुन सकते हैं।

फैशनेबल लुक: ईयरबड्स और हेडफोंस आज की तारीख में यंगस्टर्स के फैशन स्टेटमेंट का हिस्सा भी बन गए हैं। एप्पल एयरपोड्स, बोएट और जेबीएल जैसे ब्रांड्स ने ईयरबड्स और हेडफोंस को कहीं ज्यादा स्टाइलिश और ट्रेंडी बनाया है। इसके साथ महंगे ईयरबड्स या हेडफोंस का इस्तेमाल करना युवाओं के लिए एक स्टेटस सिंबल भी बन गया है।

वर्चुअल इंटरेक्शन: वायरलेस टेक्नोलॉजी ने कनेक्टिविटी को बेहद आसान और बिना किसी तरह की परेशानी वाला बना दिया है। ब्लू टूथ की सुविधा ने सचमुच इस दौर में लोगों को भीड़ में अकेला कर दिया है। यही नहीं शोरगुल भरे परिवेश में भी न्वॉयज कैंसिलेशन जैसे फीचर्स ने म्यूजिक को पहले से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है। यही कारण है कि आज लोग चलते-फिरते अपने दूसरे कामों को बाधित किए बिना म्यूजिक का आनंद ले रहे हैं। साथ ही साथ तकनीकी सुविधाओं की वजह से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जो वीडियो सामग्री की सुविधा बढ़ी है, उसके चलते भी ईयरबड्स की मांग बढ़ गई है।

पर्सनल स्पेस और प्राइवेसी: बहुत से युवा सार्वजनिक स्थानों पर असहज महसूस करते हैं, इसलिए वे ऐसी जगहों पर अपने पसंदीदा म्यूजिक के साथ रहना पसंद करते हैं और यह तभी संभव है, जब अच्छी क्वालिटी के ईयरबड्स और हेडफोंस की उन्हें सुविधा हो। जो यंगस्टर्स, कई तरह के गैजेट्स के प्रति लगाव रखती है, उनके लिए ईयरबड्स भी एक गैजेट ही है। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स में इनका क्रेज बढ़ता जा रहा है। *

होते हैं कई नेगेटिव इफेक्ट्स

भले हेडफोंस और ईयरबड्स का शौक यंगस्टर्स को बहुत भाता हो, लेकिन इसके बहुत सारे नुकसान भी हैं। लगातार हेडफोंस और ईयरबड्स का अगर हम 85 डेसिबल से अधिक ध्वनि के साथ इस्तेमाल करते हैं तो डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के अनुसार यह कानों की सेहत के लिए बेहद खतरनाक है। युवाओं के साथ समस्या यह है कि वो जरूरत से ज्यादा ऊंची आवाज में ही म्यूजिक सुनते हैं। इसलिए यह शौक उन्हें धीरे-धीरे बहरेपन या टिनिट्स समस्या की तरफ ले जा सकता है। इसका एक नुकसान यह भी है कि अकसर ईयरबड्स और हेडफोंस से लैस होने के कारण आजकल युवा, लोगों से बातचीत बहुत कम करते हैं, इस तरह उनका सोशल इंटरेक्शन बढ़ रहा है। कानों में लगातार ईयरबड्स पहनने से नमी बनी रहती है, जिस कारण यहां बैक्टीरिया पनपने का खतरा भी हर समय बना रहता है। कानों में दर्द, जलन, माइग्रेन और सिरदर्द की भी समस्या बढ़ सकती है।

खास मुलाकात / पूजा सामंत

मां बनने के बाद यामी गौतम फिल्मों में फिर से एक्टिव हुई हैं। नेटफ्लिक्स पर उनकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हो चुकी है। इस फिल्म में उनका रोल उनके नेचर से एकदम अपोजिट है, गाली-गलौज करने वाला। यामी के लिए यह रोल कितना चैलेंजिंग रहा? अब उनके पास कैसे रोल आ रहे हैं? खुली बातचीत यामी गौतम से।

अब मुझे स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर ऑफर हो रहे हैं : यामी गौतम

यामी गौतम सिर्फ खूबसूरत एक्ट्रेस ही नहीं हैं, वह एक सुलझी हुई और अच्छी एक्ट्रेस भी हैं। उन्होंने अपनी फिल्मों 'आर्टिकल 370', 'काबिल', 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक', 'चोर निकल के भागा', 'विकी डोनर' और 'दसवीं' में यह सिद्ध भी किया है। निर्माता-निर्देशक आदित्य धर से विवाह के बाद एक बेटे की मां बनीं यामी एक बार फिर फिल्मों में एक्टिव हुई हैं। हाल ही में उनकी फिल्म 'धूम धाम' नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है। फिल्म में यामी ने 'नेवर बिफोर अवतार' में खुद को पेश किया है। पेश है यामी गौतम से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

इस शुक्रवार नेटफ्लिक्स पर आपकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हुई है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताएं।

इस फिल्म की कहानी बड़ी मजेदार है। इसे मेरे पति आदित्य धर ने लिखा है। इसे डायरेक्ट किया है ऋषभ सेठ ने। फिल्म में मेरे किरदार का नाम है कोयल चड्ढा, जिसकी शादी वीर पोद्दार (प्रतीक गांधी) से होती है। फिल्म में हमारी अरेंज्ड मैरिज होती है। हम एक-दूसरे के लिए बिल्कुल मिस-मैच्ड हैं। हमारी सोच, हमारी बोली, हमारे स्वभाव, हमारी आदतों में कोई समानता नहीं है। शादी के बाद ससुराल पहुंची कोयल और उसके पति वीर के बीच कैसी नोक-झोंक होती है, उनके कल्चरल डिफरेंसेस किस हद तक पहुंचते हैं, यह देखना दर्शकों के लिए काफी एंटरटेनिंग होगा।

फिल्म 'धूम धाम' में प्रतीक गांधी के साथ यामी गौतम

इस फिल्म में आपका किरदार जमकर गालियां देता है। पर्सनल लाइफ में गाली क्या, ऊंची आवाज में बात तक नहीं करतीं आप। ऐसे में कोयल चड्ढा जैसा अपोजिट किरदार निभाना आपके लिए कितना चैलेंजिंग रहा?

'धूम धाम' में कोयल का किरदार है ही ऐसा। वह स्ट्रेट फॉरवर्ड है, आज के जमाने की है, जो अपनी बोलचाल, व्यवहार में कोई शालीनता या मर्यादा नहीं रखती। वह अपने मन की रानी है, बहुत ही साहसी भी है। वक्त पड़ने पर वो हाथा-पाई भी कर लेती है। वह अपनी डेली लाइफ में गाली-गलौज करती है। गालियां देना उसकी आदत में है। कोयल को गलियां देने में कोई संकोच नहीं है। फिल्म 'धूम धाम' के कैरेक्टर की डिमांड के अनुसार मुझे गाली देनी थी। कोयल और मेरी पर्सनालिटी में जमीन-आसमान का फर्क है, मैंने अपनी जिंदगी में कभी मामूली-सी भी गाली नहीं दी। मैं इसमें कंफर्टेबल नहीं फील कर रही थी। फिल्म में मेरे पति बने प्रतीक गांधी मुझे कंफर्टेबल कराने के लिए कहते थे कि वे मेरी गालियों को नहीं सुन रहे हैं, जिससे मैं कूल होकर डायलॉग्स बोल सकूं।

मां बनने के बाद आप पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ में क्या चेंज फील करती हैं?

मां बनने की खुशी को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मां बनने के बाद बायोलॉजिकल बदलाव लाजिमी हैं। इमोशनल स्तर पर भी एक स्त्री अधिक दयालु और सेंसिटिव हो जाती है। जहां तक प्रोफेशनल लाइफ की बात है, मां बनने के बाद एक एक्ट्रेस को अगर फैमिली से सपोर्ट मिले तो वह अपने बच्चे को वक्त देने के साथ-साथ अपने करियर पर भी फोकस कर सकती है। मां बनने के बाद मेरी जिंदगी में करियर के लिहाज से भी बहुत पॉजिटिव चेंज आए हैं। इन दिनों मेरे पास ऐसी फिल्मों के ऑफर आ रहे हैं, जो पहले कभी नहीं आए थे। मुझे अब पहले के मुकाबले स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर यानी मीनिंगफुल वूमेन ओरिएंटेड रोल मिल रहे हैं। मेरी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ अब 360 डिग्री बदल चुकी है। मैं इसे सुखद बदलाव मानती हूं।

निर्माता-निर्देशक आदित्य धर के साथ आपने शादी से पहले भी फिल्म की है। अब वह आपके पति हैं, तो उनके साथ प्रोफेशनली कितना कुछ बदला है?

मैंने आदित्य के साथ 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक' फिल्म में पहली बार काम किया। इस फिल्म के दौरान हम एक-दूसरे के प्रति कुछ स्पेशल फील करने लगे थे। आगे चलकर हमने शादी की फिर 'आर्टिकल 370' और अब 'धूम धाम' फिल्म साथ में की है। मैं हर अच्छी स्क्रिप्ट का हिस्सा बनना चाहूंगी। फैमिली में आदित्य, उनके भाई लोकेश धर और अब मैं, फिल्म लाइन से जुड़े हैं। कई बार डायनिंग टेबल पर फिल्मों के टॉपिक्स निकलते हैं। लेकिन जब आदित्य मुझे फिल्म का रोल ऑफर करते हैं, तो वो प्रॉपर चैनल से मेरे पास आता है। मेरी मैनेजर मुझे उनकी स्क्रिप्ट सुनवाती है। कहानी, किरदार अच्छे लगें तो ही मैं उस ऑफर को एक्सेप्ट करती हूं। *

कैसे हैं पति-पिता के रोल में आदित्य धर

यामी गौतम से यह पूछने पर कि उनके पति आदित्य धर एक पति और पिता के रोल में कैसे इंसान हैं, वह बताती हैं,'आदित्य बहुत ही अच्छे पति और पिता हैं। आदित्य ग्रेट स्टोरीटेलर हैं। हमारे बेटे वेदाविद को आदित्य कहानियां सुनाते हैं। हालांकि अभी बेटा उनकी कहानियां समझ नहीं पाता है, लेकिन वो अपने पापा के हाव-भावों को निहारता है, उसे एंज्वॉय करता है। हर कहानी के साथ आदित्य बहुत प्यारे-प्यारे एक्सप्रेशंस देते हैं। मैं भी अपना काम छोड़कर पिता-पुत्र दोनों को देखती रहती हूं। आदित्य और वेदाविद के बीच जो अद्भुत, प्यार भरा रिश्ता है, मैं भी उसे महसूस करती हूं।'